



सत्यमेव जयते



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

21वाँ अंक

लेखा संचिका

जनवरी - जून 2023

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका 'लेखा संगम' के 19-20वें संयुक्तांक का विमोचन



प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक



अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

केवल विभागीय वितरण हेतु

21वां अंक



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth In Public Interest

हिंदी पत्रिका

लेखा संग्राम

जनवरी 2023 से जून 2023

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

श्री राम हित

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री अभिषेक सिंह

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

परामर्शदाता

सुश्री साहिल सांगवान

उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय

श्री यशवंत कुमार

उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)—प्रथम

संपादक

सुश्री साधना राय

हिंदी अधिकारी
(लेखा एवं हकदारी)—प्रथम

सह—संपादक

सुश्री शिप्रा सिंह

हिंदी अधिकारी
(लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय

सहायक संपादक

श्री अमीन अली

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(लेखा एवं हकदारी)—प्रथम

श्री लोकेश चंद्र लाल

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(लेखा एवं हकदारी)—प्रथम

सहयोग

श्री प्रभात रंजन

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय

श्री प्रशांत कुमार सिंह

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय

मूल्य : निःशुल्क (राजभाषा हिंदी को समर्पित)

कुल पृष्ठ : 56

(नोट : लेखकीय विचारों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)

अनुक्रमणिका



क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
01	21 किलोमीटर का मेरा पहला सफ़र	श्री राजेन्द्रन नायर उप महालेखाकार/लेखा-प्रथम	11
02	मन के हारे हार है	डॉ० नमिता चंद्रा सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	14
03	एकांत (हम्पी)	श्री प्रशांत कुमार सिंह कनिष्ठ अनुवादक/लेखा-द्वितीय	18
04	भारत दुनिया का सबसे बड़ा....	श्री सतीश राय वरिष्ठ लेखाकार/लेखा-द्वितीय	22
05	आम आदमी	श्रीमती रूनेहा श्रीवास्तव पत्नी- श्री लोकेश चंद्र लाल कनिष्ठ हिंदी अनुवादक/लेखा-प्रथम	24
06	तिष्ण की निश्छल भक्ति	श्री प्रत्यूष अवस्थी सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	28
07	आँखों ने सब देखा	सुश्री साधना राय हिंदी अधिकारी/लेखा-प्रथम	34
08	बढ़ती गर्मी या घटते पेड़	सुश्री आकृति कुशवाहा पुत्री-श्री अनूप कुमार वरिष्ठ लेखाकार/लेखा-प्रथम	38
09	समय यात्रा	श्री शशांक त्रिवेदी लेखाकार/लेखा-प्रथम	40
10	शिलांग यात्रा वृत्तांत	श्री अमीन अली कनिष्ठ हिंदी अनुवादक/लेखा-प्रथम	44

लेखा संगम

अनुक्रमणिका



क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
01	नारी नहीं अबला या बेचारी	श्री चंचल कुमार तिवारी सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	49
02	ग़ज़ल	श्री राजीव सिंह सहायक पर्यवेक्षक/लेखा-द्वितीय	51
03	राम वन गए तो बन गए	श्री शिवम कुमार लेखाकार/लेखा-प्रथम	52
04	प्रकृति का अद्भुत सौंदर्य	श्री अनुराग निषाद पुत्र- श्री अनिल कुमार लेखाकार/लेखा-प्रथम	54

भाषा की सरलता, सहजता
और शालीनता अभिव्यक्ति
को सार्थकता प्रदान करती है।
हिंदी ने इन पहलुओं को
खूबसूरती
से समाहित किया है।

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

लेखा संगम



संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' का 21वां अंक प्रस्तुत करते हुए असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों की प्रतिभा एवं राजभाषा हिंदी के प्रति उनका समर्पण भाव निःसंदेह परिलक्षित होता है। इसके लिए मैं सम्पूर्ण 'लेखा संगम' परिवार को बधाई देता हूँ।

भाषा हमारे लिए वरदान के समान है। भाषा के जरिए ही हमारा ज्ञान, विज्ञान और हमारी संस्कृति नई पीढ़ी तक पहुँचती है। इसलिए इसे समृद्ध करना भी हमारी जिम्मेदारी है। भाषा जितनी सरल, सहज एवं प्रयोजनमूलक होगी, उसकी उपयोगिता उतनी ही अधिक होगी क्योंकि भाषा के द्वारा ही विचारों, भावनाओं एवं मानवीय संवेदनाओं का आदान-प्रदान संभव होता है। भाषा व्यवहार के द्वारा ही समृद्ध बनती है और हिंदी तो विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी अब केवल राजभाषा एवं संपर्क भाषा ही नहीं है बल्कि प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना की नीति से आगे बढ़ते हुए विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

पत्रिका हेतु अपनी लेखनी से रचना सृजन करने वाले सभी रचनाकारों को साधुवाद। 'लेखा संगम' के संपादक मंडल एवं इस अंक को साकार करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए मैं पत्रिका के निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ।

(राम हित)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' का 21वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। कार्यालय की हिंदी पत्रिका हिंदी भाषा के प्रति दृढ़ निश्चय को प्रदर्शित करती है। राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित राजभाषा संबंधी प्रमुख निर्देशों के अनुपालन में हम अपने कार्यालय में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी भाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं तथा हिंदी भाषा में मौलिक रचनाओं को मूर्त रूप देने में पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं। पूर्ण विश्वास है कि आगे भी यह क्रम जारी रहेगा।

मैं समस्त संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा साथ ही यह आशा करता हूँ कि आप अपनी बहुमुखी प्रतिभा से कार्यालय को गौरवान्वित करते रहेंगे।

(अभिषेक सिंह)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संपादक की कलम से...



प्रिय पाठकों....

कार्यालयीन गृह पत्रिका 'लेखा संगम' के 21वें अंक के प्रकाशन पर अत्यंत विह्वल हूँ। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। भाषा एक स्वच्छंद और अविरल नदी की भांति होती है जो सबके भावों को छूती है और मानसिक तौर पर एक-दूसरे से बांधती है। परंतु जब किसी भी भाषा को दायरे में बांध दिया जाता है तो उसकी परिधि छोटी होती चली जाती है और एक दिन वह भाषा कूप जल बन जाती है और समाप्त हो जाती है। भाषा को संकुचित होने से बचाने के लिए आवश्यक है कि भाषा सरल हो, प्रवाहमान हो एवं उसका व्यवहार पठन और पाठन दोनों स्तर पर होता रहे। हिंदी गृह पत्रिकाएं हिंदी भाषा की सरलता, प्रवाहमयता और व्यावहारिकता को बनाए रखने में अहम भूमिका रखती हैं और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में तो इलाहाबाद नगरी और हमारी कार्यालयीन पत्रिका, दोनों बेजोड़ हैं। 'लेखा संगम' के माध्यम से कार्मिकों के भाषाई सृजनशीलता को नए आयाम मिलते हैं। कविता, कहानी, व्यंग्य, गीत.... साहित्य विधा के सभी रूप इस एक पत्रिका के अंदर समाहित मिलेंगे।

बतौर संपादक मैंने पत्रिका की भाषा को सरल और बोधगम्य रखने का पूरा प्रयास किया है, आशा है सभी को पसंद आएगी। पत्रिका के सफल संपादन पर संपादक मंडल के सभी साथियों एवं कार्यालय परिवार के सभी रचनाकारों को असंख्य धन्यवाद। 'लेखा संगम' प्रगति पथ पर सदैव अग्रसर रहे- यही कामना है। पत्रिका को और अधिक रुचिकर बनाने हेतु आप के अमूल्य विचारों का स्वागत है।

॥ जय हिंद, जय हिंदी ॥

साधना राय

(साधना राय)
संपादक



लेखा संगम

गद्य संगम

21 किलोमीटर का मेरा पहला सफ़र



श्री राजेन्द्रन नायर

उप महालेखाकार/निधि

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति ने मानव जीवन को सुविधाजनक बना दिया है। आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता के फलस्वरूप हम अपने घर के साथ-साथ कार्यालय में भी आराम से बैठे हैं, लेकिन शारीरिक गतिविधियों और ओवरआल वेलबीइंग में लगातार कमी होती जा रही है। व्यायाम या खेल-कूद से आप अच्छे स्वास्थ्य का लाभ उठा सकते हैं। लेकिन आज व्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार के खेल या शारीरिक गतिविधि से जुड़कर मुद्दे को हल करना प्राथमिकता नहीं है। बल्कि ज्यादातर व्यक्ति मनोरंजन के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का बहुत ज्यादा प्रयोग करते हैं जिस कारण शारीरिक रोग और अन्य असंतुलन एक खतरनाक स्तर तक पहुंच जाते हैं। लेकिन क्या स्वयं को बदलना और स्वस्थ जीवन जीना मुश्किल है ?

धन-संपत्ति का हम तभी सुख भोग सकते हैं जब हमारा स्वास्थ्य अच्छा हो।

45 साल की उम्र में नींद से उठा, जब मुझे सुबह-सुबह सैर के लिए जाने की सलाह मिली। हालांकि मैंने कई साल पहले खेल-कूद छोड़ दिया था, लेकिन फुटबॉल और एथलेटिक्स खेलने वाले खिलाड़ी से सुबह के वॉकर बनने की सलाह को सहजता से स्वीकारा नहीं जा सका।

सच को स्वीकार करना अभी भी मुश्किल था कि उम्र ने मुझपर कब्ज़ा जमा लिया है और मुझे अब कुछ शर्तों पर जीवन जीना होगा। कुछ दिनों के सोच-विचार के बाद शुभ मुहूर्त पर अंततः मैं टहलने चला गया। चलते समय दिमाग दयनीय और कठिन स्थिति से गुजर रहा था क्योंकि आज एक तेज धावक और लम्बी कूद का खिलाड़ी महज एक मॉर्निंग वॉकर बनकर रह गया था।





सैर के तीसरे दिन ही अचानक 30 मीटर तक धीमे और फिर 30 मीटर तक दौड़ने का फैसला किया और वह धीरे-धीरे बढ़कर प्रत्येक 100 मीटर धीरे चलने के बाद 8 किलोमीटर की दौड़ तक पहुंच गया। दौड़ की दूरी बढ़ाने के निर्णय को सड़क के कुत्तों से प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिन्होंने मुझे वापस धकेल दिया जिससे मेरा रनिंग एरिया सिर्फ 2 किलोमीटर के हिस्से तक ही सीमित रह गया था।

कोई भी शुरुआत शून्य से प्रारंभ होती है।

दिसंबर 2015 में आयोजित होने वाले हाफ मैराथन कार्यक्रम के लिए एक विज्ञापन देखा और रुपये 600 के शुल्क का भुगतान करके अपना पंजीकरण करवाया। प्रारंभिक उत्साह तब धाराशायी हो गया जब यह जानकारी प्राप्त हुई कि मैराथन की कुल दूरी 21.097 कि.मी. है। इस लम्बी दौड़ के लिए न तो मेरा अभ्यास था और न ही इस तरह के साहसिक कार्य के लिए मेरी उम्र उपयुक्त थी। लेकिन एक बार पंजीकृत होने के बाद रुपये 600 का नुकसान मुझे बार-बार परेशान कर रहा था। गुजरात के लोग किसी भी उद्यम में केवल "लाभ" के आदर्श सूत्र के साथ प्रवेश करते हैं। इसलिए मैंने इस लाभांश पर नजर रखते हुए इसे निवेश के रूप में लिया।

लाभ के लिए थोड़ा जोखिम तो मोल लेना ही पड़ता है।

प्रत्येक सफल पुरुष के पीछे एक महिला होती है। जब मेरी पत्नी मुझे दौड़ स्थल तक छोड़ने आई तो मेरी सफलता अब सिर्फ इसी धारणा पर आधारित थी। मैं भी मैदान में दौड़ स्थल पर अन्य धावकों के साथ शामिल हो गया। जैसे-जैसे दौड़ आगे बढ़ने लगी वैसे-वैसे शरीर में उत्पन्न प्रारंभिक गर्मी से श्वसन में तकलीफ होने लगी और फलस्वरूप हिचकियाँ (Hiccups) भी आने लगीं लेकिन इन सबके बावजूद आगे के लगभग 7 कि.मी. की दौड़ मैंने बिल्कुल आराम से पार की। नौ कि.मी. के निशान को देखते ही शरीर में थकान आने लगी और अब मैं कमजोरी महसूस करने लगा। मैंने किसी तरह आधी दूरी को पार करने का फैसला किया और फिर वापसी की यात्रा शुरू हो गई। वहाँ से आगे प्रत्येक मीटर की दूरी मुझे एक कोस के समान लग रही थी। 13 किलोमीटर के निशान पर मुझे नमकीन की एक प्रसिद्ध दुकान दिखाई दी। इस दर्दनाक दौड़ को पूरा करने की बजाय जेब में पड़े पैसों से कुछ व्यंजन खरीदकर और ऑटो से घर जाकर खाने का स्वाद लेने का विकल्प था।

शुरुवाती दौर में मुश्किलें आती हैं परंतु हमें किसी भी तरह आगे बढ़ना होता है।



पूरी ताकत झोंकने के बावजूद भी केवल 16 किलोमीटर तक पहुँच पाया और उसके बाद ऐसे लगा जैसे सामने एक दीवार है जिसके कारण मैं आगे नहीं बढ़ पा रहा था। सिर से पाँव तक कुछ भी आगे नहीं बढ़ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे पैरों में अब कई किलोग्राम की बेड़ियाँ डाल दी गयी हो। मुझे ऐसा महसूस होने लगा की मेरे जूते किसी भारी धातु से बने हैं।

भ्रामक स्थिति में अक्सर मन भटकने लगता है।

इस तरह दौड़ में बहुत चुनौतियाँ आईं लेकिन एक खिलाड़ी में किसी भी कीमत पर हार न मानने का जो जज्बा होता है वह मेरे दिमाग पर हावी होने लगा। थकावट से भरे मन में शेष 5 किलोमीटर को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करके पूरा करने की सकारात्मकता आई। योजना ने काम किया और जुझारू मानसिकता के कारण लगभग 18 किमी की दौड़ पार कर चुका था। अब मुझे दौड़ की समाप्ति बिंदु दिखाई देने लगी। अंतिम दो किलोमीटर के लिए पूरी ऊर्जा सक्रिय हो गयी और गति घटने की बजाय बढ़ने लगी। यह विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं 02 घंटे 16 मिनट तक लगातार दौड़ा और 21 किलोमीटर की दौड़ को पूरा किया।

मनुष्य के पास बाधाओं को पार करने की आंतरिक शक्ति होती है।

इस शक्ति का अहसास करें और अपने भीतर जगाएँ।



मन के हारे हारे हैं ...



डॉ. नमिता चंद्रा
सहायक लेखाधिकारी

न जाने वह मतिभ्रम था या वास्तविकता..। किन्तु वह स्पष्ट रूप से संशय की स्थिति में स्वयं को बचाने का प्रयास कर रहा था। ऐसा लग रहा था कि कार की स्टियरिंग वह नहीं अपितु कोई और ही चला रहा था। स्टियरिंग उसके नियंत्रण में ही नहीं थी। वह सीधा चलना चाहता तो कार बाईं या दाईं ओर भागती। घबराहट में उसे कुछ समझ ना आया और उसने झटके से ब्रेक पर पैर मारे और कार अचानक से रुक गई। कार के रुकते ही उसने चारों तरफ देखा। वह नदी के पुल पर बीचो बीच खड़ा था और यदि उसने तुरंत ब्रेक न लगाए होते तो गाड़ी रेलिंग तोड़ते हुए नदी में जा गिरती। मुदित को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, आखिर हो क्या रहा था यह ? उसे गाड़ी चलाते हुए लगभग 15 वर्ष हो चुके थे। वह एक कुशल ड्राइवर था। तो फिर आज ... आखिर उसका स्वयं पर से नियंत्रण कम क्यों होता जा रहा था ?

मुदित किंकर्तव्यविमूढ़—सा गाड़ी में बैठा रहा। उसमें गाड़ी स्टार्ट करने की हिम्मत ही न रही। तभी मोबाइल पर तनु का नंबर प्लैश किया। काँपते हाथों से उसने काल रिसीव की। “हॅलो, मुदित कहाँ हो तुम ? कब तक आ रहे हो ? कितनी देर हो गई ?” उफ़, फिर वही सवाल की झड़ी। झुंझलाकर मुदित ने फोन ही काट दिया और सारी हिम्मत एकत्रित कर गाड़ी स्टार्ट की। लगभग 10 मिनट बाद वह घर पहुँचा। तनु ने दरवाजा खोलते ही अपनी चिरपरिचित मुस्कान के साथ स्वागत किया। तनु ... उसकी पत्नी... वही तनु जिसकी मुस्कान हमेशा उसके सारे दुख कम कर देती थी। फिर आज ऐसा क्या हो गया था की तनु का प्यार भी उसके गमों को कम करने में अपर्याप्त हो गया था।

चाय का कप तनु के हाथों से लेकर वह बालकनी में जा बैठा। नीचे गाड़ियों का आना—जाना देखते हुए उसे वह समय याद आया जब वह और तनु नई शादी के बाद तुरंत उस घर में आए थे। कितने शौक से सजाया था उन दोनों ने यह घर। एक—एक वस्तु अपने हाथों से खरीद कर यथास्थान रखा था, और आज उसे इस घर में भी मानसिक शांति नहीं मिल पा रही है। न जाने क्यों वह इतना भ्रमित और निराश होता जा रहा है। ऑफिस में जिस पर भरोसा किया उसी ने धोखा दिया। धोखे की वजह से घाटा



होता रहा और आज तो परिस्थितियाँ ही बदल गई हैं।

तभी तनु ने आकर उसके सर पर हाथ फेरा और बोली "क्या हुआ मीतू (प्यार से वह उसे मीतू ही तो पुकारती थी) आज कल तुम बहुत खामोश रहते हो ? कोई चिंता की बात तो नहीं है, प्लीज मुझसे अपनी हर परेशानी बाँट लिया करो। आखिर अर्धांगिनी हूँ तुम्हारी, तुम्हारे सुख और दुख दोनों पर मेरा बराबर का हक है।" मुदित ने उसकी तरफ देखा, वही चेहरा बोलती हुई आँखें, वही मासूम मुस्कान। इसके लिए तो वह दुनिया की सारी रस्मों को तोड़ने को तैयार था उसने सबके विरुद्ध जाकर तनु का हाथ थामा था। उसे हमेशा खुश रखने का खुद से वादा किया था। फिर आज वह इतना खुदगर्ज कैसे हो गया ?

"मुदित ओ मुदित क्या हुआ ?" तनु की आवाज से वह विचारों की शृंखला से बाहर आ गया और बोला "हाँ... कुछ नहीं। बस थोड़ा थक गया हूँ।" तनु ने कहा "कोई बात नहीं, तुम आराम करो।" "चली गई तनु? कितनी भली है। कभी किसी बात का बुरा नहीं मानती। हर हाल में खुश रहना ही उसका जीवन मंत्र है।" आँखें बंद करके वह बेड पर लेटा और आँखें बंद करते ही उसकी आँखों के सामने आज का पूरा घटनाचक्र घूम गया। आज उसकी अपने ऑफिस के एच आर रजत से कहासुनी हो गई और मुदित ने उस पर हाथ उठा लिया। यह स्वभाव तो नहीं था उसका ? आज उसने अपना आपा कैसे खो दिया ? उफ... और फिर उसे जान से मारने की धमकी भी दी ? और फिर आज यह मतिभ्रम कहीं सच में उसे कोई मानसिक बीमारी तो नहीं ?

"मीतू आओ डिनर लगा दिया है"। तनु ने आवाज दी। खाना खाते हुए उसने तनु को ध्यान से देखा "कितनी कमजोर हो गई है तनु, आजकल मुझे हो क्या गया है ? मैं क्यों इतना उलझ गया हूँ ? दोनों खामोशी से खाना खाते रहे और खाकर वह लेट गया। आँखों में नींद कहाँ थी उसे सारी बातें याद आ रहीं थी। वह दिन जब उसने रजत को एच आर की पोस्ट दी थी। रजत था ही ऐसा, अपनी बातों से किसी को भी आकर्षित कर लेता। वह भी उसकी बातों के जाल में ऐसा उलझा कि सच और झूठ में अंतर न कर पाया। धीरे-धीरे ऑफिस की पूरी बागडोर रजत संभालने लगा था। मुदित को उसने इस तरह वश में कर लिया था कि वह रजत की किसी बात को न नहीं कर पाता। मुदित उसकी संगत में नशे का भी बुरी तरह से आदी हो गया था। शराब तो पहले ही पीता था अब तो रजत ने उसे कई और भी नशे का आदी बना दिया था और कदाचित नशे की वजह से ही अब उसका अपनी इंद्रियों पर भी नियंत्रण नहीं रह गया था। प्रखर बुद्धि मुदित अब इतना असहाय हो गया था कि सामान्य निर्णय ले सकने में भी अक्षम था। अपनी इस स्थिति के लिए वह स्वयं ही उत्तरदायी था।





रजत ने उसकी इस कमजोरी और स्थिति का फायदा उठाकर अकाउंट में भी काफी हेरा-फेरी की है। आज जब उसने जांच की तो वह हैरान रह गया और जब रजत से इस बारे में बात की तो वह बहस करने लगा। सच तो यह है की उसने इसी उद्देश्य से मुदित को बुरी आदतों के दलदल में उतारा था और बहुत सारी गड़बड़ियाँ की थी। "अब क्या करूँ मैं? कैसे इस मकड़जाल से बाहर निकलूँ?" मुदित का दिमाग तेजी से चल रहा था। तनु गहरी नींद में थी। वह उठकर बालकनी में आ गया। मन में कई विचार आ रहे थे। आत्महत्या कर लूँ... सब छोड़कर कहीं दूर चला जाऊँ... या फिर कुछ और। सोचते-सोचते कब नींद आ गई पता ही न चला।

सुबह किसी की प्यार भरी छुअन से उसकी आँख खुली तो देखा अंशुल, उसका सात साल का बेटा उसे निहार रहा था। उसने अंशुल को प्यार से बुलाया और गोद में बैठाया। "कैसा है मेरा बेटा? आज जल्दी उठ गया?" मुदित ने उसे पुचकारते हुए पूछा। "हाँ पापा, आज मुझे आपसे मिलना था आप रोज देर से आते हो तब मैं सो जाता हूँ और सुबह जब मैं स्कूल चला जाता हूँ तब आप उठते हो। मैं तो आपसे मिल ही नहीं पाता। आज मुझे आपसे बहुत जरूरी बात करनी है"। मुदित उसकी बातों का आनंद लेते हुए बोला "तो बताइए आपको क्या जरूरी बात करनी है। मैं आपसे बात करने के लिए तैयार हूँ।" अंशुल ने गंभीर मुखमुद्रा में मुदित से कहा "मुझे स्कूल प्रोजेक्ट में टॉपिक मिला है 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' और इस पर मुझे एक चार्ट बनाना है। प्लीज़ आप मेरी हेल्प कर दो ना।" मुदित उसकी भोली बातों में अपनी सारी परेशानियों को भूल रहा था। उसने अंशुल को गले लगते हुए कहा 'ओके बेटा आप फ्रेश हो कर आइए नाश्ते की टेबल पर हम इसे डिस्कस करते हैं।' "तनु भी पिता-पुत्र की बातों का आनंद लेते हुए बोली "तो फिर आप लोग जल्दी से फ्रेश हो कर आइए हम सब डाइनिंग टेबल पर मिलते हैं।"

मुदित फ्रेश होकर लैपटॉप लेकर उस विषय के संबंध में गूगल पर सर्च करने लगा। 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' इस पंक्ति को मन में उसने कई बार दोहराया और एक स्वयं में अलग सी शक्ति को महसूस किया, सच ही तो है। अचानक से उसके मन में छाए काले बादल जैसे छँटने लगे। रात की सारी उलझने मानो रेत के महल की भांति भरभराकर ढह गईं। वह क्यूँ इतना कमजोर हो रहा है। जो बिगड़ा है उसे बनाया भी तो जा सकता है, और उसे अपने पिता जी की कही बात याद आई 'बेटा कोई भी काम इतना नहीं बिगड़ता कि उसे सुधारा न जा सके। बस सही दृष्टिकोण और हिम्मत होनी चाहिए और हमें पूरे मन से प्रयास करने चाहिए।' मुदित को सामने एक नया रास्ता दिख रहा था जो कठिन तो था किन्तु असंभव नहीं। उसने अंशुल को प्रोजेक्ट के संबंध में एक रूपरेखा बताई और खुद को बहुत हल्का महसूस किया। तनु भी आज उसके व्यवहार में आए सुखद बदलाव से अचंभित थी। उन दोनों के



साथ नाश्ता करने के बाद मुदित ऑफिस के लिए निकल गए।

ऑफिस में घुसते ही आज उसने पहले की तरह मुस्कुराकर सबको गुड-मॉर्निंग बोला तो सब हैरान रह गए। रजत तो हतप्रभ था। मुदित अपने चैम्बर में था कि रजत अंदर आया और बोल "सॉरी यार कल कुछ गलतफ़हमी हो गई थी। आ बैठ, बात कर के उसे दूर करते हैं" ऐसा कहते हुए सिगरेट उसकी तरफ बढ़ाने लगा। मुदित ने उसे घूर कर देखा और सिगरेट हाथ में लेकर उसे ध्यान से देखते हुए बोला "अब बस रजत। आज से मेरे ऑफिस में यह सब नहीं चलेगा। आज से तुम्हारा नोटिस पीरियड शुरू हो रहा है। बेहतर होगा कि तुम कोई और जॉब ढूँढ लो क्योंकि एक माह बाद तुम्हें इस ऑफिस से जाना है।" रजत अवाक रह गया। "क्या कह रहे हो मुदित, मेरे दोस्त ? ऐसा मत कहो मैं कहाँ जाऊँगा। तुम मुझे ऐसे जॉब से नहीं निकाल सकते।" "हाँ, इसीलिए तो एक माह का नोटिस दे रहा हूँ। मैं रूल्स के अनुसार ही चल रहा हूँ। बेहतर होगा तुम भी उसे फॉलो करो।" मुदित ने सख्त शब्दों में कहते हुए सिगरेट को अपने पैरों के नीचे कुचल दिया और बेल बजाई। "जी सर" चपरासी ने अंदर आकर कहा। "अकाउंट्स की सारी करेंट फाइल ले आओ मुझे देखना है" मुदित ने कड़े शब्दों में कहा और रजत को बाहर जाने का इशारा किया। रजत धीमे कदमों से बाहर निकल गया।

मुदित का सिर दर्द से फट रहा था मन में अजीब सी बेचैनी हो रही थी। मन हुआ कि एक सिगरेट पी ले। हाथ पैकेट तक गया भी लेकिन अंतरात्मा से पुनः आवाज आयी "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत...। अब उसे कमजोर नहीं पड़ना है जिस दलदल में वह फंस गया है उससे बाहर आकर उसे सब कुछ ठीक करना है। उसने पानी का एक घूँट पिया और फाइलों को ध्यान से देखने लगा आज उसे इन फाइलों में अपनी पत्नी और बेटे का उज्ज्वल भविष्य दिख रहा था, वह भविष्य जिस पर उसने अपने नशे की बुरी आदत की स्याही बिखेर दी थी। अब मुदित को उनके जीवन से इस स्याह परत को हटा कर उनका जीवन पुनः रोशनी से भर देना है।





श्री प्रशांत कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

जो खुदा के जोया हैं अर्श पर, वो खुदा से जाके हों हमसुखन
जिसे ढूँढता फिरे खुद खुदा, मुझे उस बसर की तलाश है।

मेरे कई दोस्त अक्सर मुझसे ये पूछते हैं— तुम गोवा में रहकर कैसे बोर हो जाते हो ? अब उन्हें कैसे समझाऊँ !!! मैं कहता हूँ — हो सकता है। परमात्मा भी अपनी एकरसता से ऊब गया था, इसलिए इतने रंग बनाए। अपनी अनश्वरता से ऊब गया था, इसलिए नश्वर चीजें बनाई। अपनी पूर्णता से ऊब गया था, इसलिए अपूर्ण संसार बनाया। अपनी शाश्वत अरूपता से उकता गया, इसलिए इतने रूप गढ़े। शायद हम भी एकरसता से इसीलिए ऊब जाते हैं। ये तत्व हमें परमात्मा से विरासत में मिला है। कितनी ही सुंदर जगह पर रह रहे हों, एक समय बाद बोर होने लगते हैं। सब कुछ पुराना पड़ जाता है। वही सड़कें, वही मकान, वही रास्ते, वही लोग। इस एकरूपता से शिथिल होकर हम निद्रालु हो जाते हैं। कुछ नया नहीं होता तो खोज की ज्योति मद्धिम पड़ जाती है।

मुझे सड़क पसंद है। जब कभी दोस्तों के साथ हाईवे पर निकलता हूँ तो ऐसा लगता है एकदम नींद खुल गई। नये नज़ारे, नये रास्ते, नया—नया सा सब कुछ। नई कल्पनाओं में डूब जाता हूँ। अरे.., ये बगल को जाता रास्ता कितना सुंदर है !! कहाँ जाता होगा ? दूर वहाँ एक गांव दिखाई दे रहा है.. शायद उस गांव में जाता होगा ! कैसा होगा वो गांव ? वहाँ के लोग कैसे होंगे ?

आँखों के तंतु जाग उठते हैं। चारों तरफ बिखरी खूबसूरती को मन समेट लेना चाहता है। कहीं कोई दृश्य छूट न जाए ! वह 'खोज' का तत्व फिर से सक्रिय हो जाता है। सड़क से दूर खेतों के बीच छिटपुट मकानों के समूह दिखाई पड़ते हैं, कुछ इतने सुंदर, प्यारे घर जिन्हें देखकर सोचता हूँ कि मैं भी एक दिन ऐसा ही सुंदर घर बनाऊँगा। विस्तृत नीले आकाश के नीचे स्वच्छंद सड़क पर भागती कार, चेहरे पर पड़ती ठंडी हवाएं रोज की भागम—भाग को पीछे छोड़ निर्विचार से भर देती है।

मुझे याद है पिछली सर्दियों में मैं और मेरा दोस्त हम्पी (कर्नाटक) गए थे। हमारी कार हम्पी क्षेत्र में



प्रवेश कर चुकी थी लेकिन जहां हमे जाना था उससे लगभग 15 किमी पहले ही तुंगभद्रा नदी के किनारे चलते-चलते नदी के उस पार एक छोटा पहाड़ दिखा। वैसे तो पूरा क्षेत्र ही छोटे-छोटे पहाड़ों से बिखरा पड़ा है लेकिन इस पहाड़ की चोटी पर एक मंदिर था। मद्धिम हवाएँ मंदिर की घण्टियों से टकराकर इस पार तक आ रही थी। मैंने दोस्त की तरफ देखा, उसने मेरी तरफ। आंखों ही आंखों में सहमति बन गई। गाड़ी वही तुंगभद्रा के किनारे खड़ी की और ऊपर चढ़ने लगे। ऊपर जाकर देखा तो एक सुनसान हनुमान मंदिर था। यहाँ कोई पुजारी नहीं है। इस निर्जन चोटी पर वायु पूरे वेग में है। मंदिर के बाहर ही एक कोने में स्थापित हनुमान ध्वजा तेज हवा से फड़फड़ाते हुए एक तरफ को झुकता जाता है। मंदिर में मत्था टेकने के बाद बाहर एक शिला पर बैठकर ऊंचाई से नीचे चारों तरफ का नज़ारा देखने लगे।

शाश्वत अवनि पर दूर तक फैले क्षितिज में किष्किंधा पर्वत श्रेणी एक गोलाई बनाते हुए परिधि बन्ध को घेरे हुए है। धरती के सबसे पुराने भूखंडों में से एक इस पर्वत की सांसे अब मन्द पड़ रही है। एक लंबे कालचक्र के बाद अब जमींदोज होने को अग्रसर है। पश्चिमी घाट से निकल कर तुंगभद्रा जब



कर्नाटक में प्रवेश करती है तो इन्ही पर्वतों के बीच से होकर गुजरती है। यहाँ नदी की धार उत्तर भारत के मैदानी नदियों की तुलना में तेज है। ऊंचाई से देखने पर नदी किसी राजमार्ग की तरह दिखाई देती है। नदी के दोनों तरफ भारत के पुरातन वैभव का गवाह रहे महान विजयनगर साम्राज्य के अवशेष बिखरे पड़े हैं.. और बिखरी हैं देवताओं की खंडित मूर्तियाँ...। ऐसा लगता है जैसे पूरे शहर को किसी विशाल बम से उड़ा दिया गया हो। लेकिन इसकी समृद्धता और कला कौशल की यादगार ये खंडहर हैं जो समय के थपेड़े सह कर भी अपनी धरोहर संजोये हुए हैं। एक वक्त में यहाँ समृद्धशाली सभ्यता निवास करती होगी। ये खंडहर बताते हैं कि अपने गौरवशाली अतीत में यहाँ कलाकारों ने वास्तुकला, चित्र कला और मूर्ति कला की नायाब शैली को विकसित किया। यहाँ से देखने पर ऐसा लगता है कि हम मध्यकालीन इतिहास के बीचों बीच खड़े हैं। यहाँ आकर महसूस होता है कि प्राचीन भारत का एहसास कितना भव्य



रहा होगा और विदेशी आक्रांताओं ने उस भव्यता को किस कदर नेस्तनाबूत किया होगा। यहाँ से ये दोनों ही नजारे साथ साथ देखने को मिलते हैं।

इतिहासकार बताते हैं कि 14वीं शताब्दी में तुंगभद्रा के किनारे बसा यह शहर महान विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी जो उस समय समृद्धि, वैभव, आध्यात्म, दर्शन, विभिन्न मंदिरों, मठों, मिश्रित संस्कृतियों, कृषि, वास्तुकला, स्थापत्य तथा व्यापार का केंद्र था। पर्शियन, यूरोपीय और पुर्तगाली यात्रियों के अभिलेखों से पता चलता है कि 15वीं शताब्दी आते आते विजयनगर-हम्पी, बीजिंग के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मध्यकालीन शहर बन चुका था। द्वारसमुद्रम होते हुए पश्चिम में फारस, अरब प्रायद्वीप, पुर्तगाल, डच, मध्य एशिया में समरकंद और बुखारा तथा पूरब में श्याम देश, मलय, जावा इत्यादि देशों के व्यापारी यहाँ तिजारत के लिए आया करते थे। सन 1565 में तालीकोटा के युद्ध में सल्तनत की संयुक्त सेना ने यहाँ के अंतिम शासक राजा राम राय को शिकस्त दे दी। आक्रमणकारी नगर में घुस आए और भारी तबाही मचाई। राजा राम राय का सिर कलम कर दिया गया। मंदिर मठ तोड़ दिए गए। पुस्तकें जला दी गईं। सम्पदा लूट ली गई और नगर में आग लगा दिया गया। तुंगभद्रा का हरा पानी लाल होकर बहता रहा। अब ये नगर यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित कर दिया गया है।



(तालीकोटा के युद्ध में सल्तनत के शासकों द्वारा खंडित किला और प्रांगण में बिखरी मूर्तियाँ)

लेकिन इस शहर का इतिहास सिर्फ इतना ही पुराना नहीं है। इन पथरीली सरखेज जमीनों में सदियों नहीं बल्कि युगों का इतिहास दफन है। मान्यता है कि देवी पार्वती ने आदियोगी शिव को पाने के लिए यहीं हेमकूट पर्वत पर बरसों कठोर तपस्या की थी। देवी पार्वती के ही एक अन्य नाम 'पम्पा' के नाम से ये जगह पुराणों में "पम्पातीर्थ क्षेत्र" के नाम से मिलता है जो कालांतर में 'हम्पा' और फिर 'हम्पी' हो गया। पार्वती के नाम पम्पा पर ही शिव को 'पम्पापति' भी कहते हैं। यहीं हेमकूट पर्वत के पदतल में पम्पा सरोवर है। लंका प्रवास को निकले भगवान श्रीराम जब यहां से गुजरते थे तो इस सरोवर में स्नान किया और यहीं चातुर्मास किया। त्रेता युग में वानर राज सुग्रीव का शासन इसी किष्किंधा पर्वत शृंखला में फैला था। इन्ही पर्वतों में से एक पर केसरी नंदन हनुमान का जन्म हुआ जहां उनके पिता अपने कबीले के मुखिया थे। इस पर्वत को माता अंजनी के नाम पर अब अंजनी पर्वत के नाम से जाना जाता है।



बेल्लारी के निकट प्राप्त सम्राट अशोक के शिलालेखों से पता चलता है कि ईसा पूर्व दूसरी-तीसरी शताब्दी के दौरान ये भूखंड मगध साम्राज्य का हिस्सा रहा। कालांतर में चालुक्य और होयसल शासकों के अधीन फलते-फूलते यह नगर 15वीं शताब्दी में तुलुव वंश के प्रतापी शासक कृष्णदेव राय के संरक्षण में अपने वैभव के चरम पर पहुंचा।

करीब घंटे भर उस ऊंचाई से हम दूर गांवों को निहारते रहे। एक खेत से धुआं उठकर ऊपर धुंध में मिल जा रहा था। शायद कोई किसान पराली जला रहा होगा।



(मल्लिंग पर्वत से दृश्यमान राजा कृष्णदेव राय के शासनकाल में निर्मित विश्वनाथ विह्वल मंदिर)

सूरज पहाड़ों के पीछे छिपने लगा। आकाश में फैला बैंगनी कैनवास अस्ताचलगामी सूरज के साथ जर्द पड़ता जा रहा था। नीचे खेतों के ऊपर ओस के बादल आ गए थे। हवा में ठंडी नमी आ गई और कानों से टकराने लगी। हमने अपने जैकेट्स के चेन बंद कर लिए, घुटने छाती से चिपका लिए और जैकेट का कॉलर ऊपर कर जैसे तैसे कान ढक लिया। हमें भी कोई जल्दी नहीं थी। लगभग पहुंच ही गये थे, थोड़ी ही दूरी बची थी और सड़क अच्छी थी तो गंतव्य तक पहुंचने में ज्यादा देर नहीं लगने थे। गेस्ट हाउस पहले ही बुक कर लिया था, वहां जाकर सिर्फ 'चेक-इन' करना था।

आसपास से थोड़ी लकड़ी और सूखे पत्ते जमा कर हमने आग जला ली। जूते खोलकर एक तरफ कर दिये, हाथ पैर सीधा किया और जलती लौ के पास बैठे रक्ताभ सूरज को ढलते देखते रहे। फिर लेट गये। ऊपर आसमान में काले बादल थे जिनके पीछे से आधा चाँद झांक रहा था। लौ बुझ चुकी थी लेकिन राख के भीतर गर्माहट शेष थी। कुछ क्रांतिबीज हवाएं मुझसे लिए जा रही थी और वहीं लेटे लेटे मैं सोचता रहा...। नदियां बहती हैं, क्योंकि उनके जनक पहाड़ अटल रहते हैं। शायद इसीलिए इस संस्कृति ने अपने तीर्थस्थान पहाड़ों और नदियों में खोज निकाले थे दृ शाश्वत अटल और शाश्वत प्रवाहमान। हजार हमले सह कर भी चिर पुरातन और नित्य नूतन ये सनातन संस्कृति अपने पहाड़ों की तरह अटल है और नदियों की तरह प्रवाहमान। मैं एक के साथ खड़ा हूँ, दूसरे के साथ बहता हूँ।



अचानक घड़ी पर नजर गई तो देखा नौ से ऊपर हो रहा था। फटाफट नीचे उतरे और गाड़ी गेस्ट-हाउस की दिशा में चल निकली।



भारत दुनिया का सबसे बड़ा अस्पताल बन जायेगा



श्री सतीश राय
वरिष्ठ लेखाकार

भारत को विश्व के सबसे आध्यात्मिक देशों में एक माना गया है। यहाँ योग व ध्यान का जन्म स्थल है। भारत धर्म प्रधान देश होने के कारण यहाँ के लोगों में श्रद्धा, ईमानदारी, निष्ठा, यकीन, भक्ति भावना कूट-कूट कर भरी है।

भारतीय रहन-सहन की शैली एवं संस्कृति से निरन्तर दूरी बढ़ते जाने के कारण भारत के लोग धीरे-धीरे बीमार हो रहे हैं। वर्तमान में 50 करोड़ लोगों को कुछ न कुछ बीमारी है जो लगातार बढ़ रही है। यदि यही हाल रहा तो आगे आने वाले समय में भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा अस्पताल बन जायेगा। जहाँ हर दूसरा आदमी बीमार होगा और अस्पताल में किसी न किसी बीमारी का इलाज करवा रहा होगा। यदि ऐसे में लोग अभी भी नहीं चेते तो आने वाले 40 वर्ष पश्चात् भारत की स्थिति काफी गम्भीर होने वाली है।

किसी भी देश को विकास की दौड़ में आगे ले जाने का श्रेय वहाँ के लोगों का स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन दोनों का होता है। बीमार व्यक्ति अपनी 100 प्रतिशत शक्ति के साथ काम नहीं कर पाता। वह 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत की शक्ति के साथ काम कर रहा होता है अर्थात् एक व्यक्ति का काम दो या तीन लोग करेंगे।

जिस देश में ज्यादातर लोग बीमार रहने लगते हैं तो वहाँ वे लोग समय से पहले रिटायरमेंट लेना शुरू कर देते हैं और काम करना बन्द कर देते हैं जिससे आगे चलकर देश में काम करने वालों की कमी हो जाती है और देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचता है।

आज से 35 वर्ष पूर्व तक भारत की गिनती उन देशों में होती थी जहाँ पर लोगों को बहुत परिश्रमी माना जाता था, जो लोग आलसी होते थे, उन्हें बुराई की निगाह





से देखा जाता था। भारत में एक कहावत बहुत प्रचलित थी कि आलस एक ऐसा सुख है, जिसका परिणाम आगे दुःखद है। भारत में बीमार होने का सबसे बड़ा कारण है कि लोग यहाँ पर 'पसीना बहाकर नहीं' बल्कि पैसा बहाकर स्वस्थ (फिट) रहना चाहते हैं। वास्तविकता यह है कि पसीना बहाना जरूरी है न कि पैसा बहाना।

मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से कभी ठीक न होने वाली मरीजों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। डायबिटीज से पीड़ित व्यक्ति शुगर की दवा खरीदने में अपने पूरे जीवन काल में 15 लाख से अधिक खर्च करता। यह बीमारी पहले किये गये ऐसे खर्चों एवं जीवन शैली के कारण होती है, जो स्वास्थ्य के लिए सही नहीं था।

यहाँ स्वास्थ्य को प्राथमिकता न दिये जाने के कारण ज्यादातर लोग अनफिट हैं। उनका वजन बढ़ा होगा या हमेशा थके-थके से लगते हैं, सुस्त रहते हैं, वे किसी न किसी बीमारी से घिरे हुए होंगे। यदि परिवार में कोई गम्भीर बीमार हो गया तो वह उस पूरे परिवार को तोड़कर रख देती हैं। पूरा परिवार आर्थिक संघर्ष करता है। बीमारी पर अपना जेवर, दुकान, मकान बेचकर, कर्ज लेकर इलाज कराता है। यदि पूरा देश ऐसा होगा तो देश कहाँ जायेगा। यह देश असफल लोगों का देश हो जायेगा।

इस गम्भीर आसन्न परिस्थिति से निपटने के लिए समाज में बड़े स्तर पर स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ानी होगी, विशेषकर बच्चों को स्वास्थ्य, शिक्षित करना होगा, क्योंकि भावी पीढ़ी वही होने वाली है। खाने की चीजों में मिलावट के विरुद्ध कड़े दण्डनीय विधान एवं जुर्माने लगाने होंगे। दवा कम्पनियों की मनमानी रोकने के लिए उनकी बड़ी लॉबी के विरुद्ध कड़े कदम उठाने होंगे। सरकारी एवं सामाजिक इच्छा शक्ति ही हमें इस आने वाले संकट से बचा सकेगी।





श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव

पत्नी— श्री लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

साधारणतया हम सभी उच्च वर्ग को अधिक महत्व देते हैं। उन्हें एक विशेष दृष्टि से देखते हैं तथा उनके आसपास रहने को हम आतुर रहते हैं। हालांकि देखा जाए तो ऐसे उच्च वर्ग के लोगों से हमारा न कोई विशेष नाता हो पाता है और न ही उनकी कोई विशेष कृपा दृष्टि ही मिल पाती है। फिर भी हम पूर्णमासी के चाँद तक जाना चाहते हैं। जहाँ तक जा पाना साधारण लोगों के लिए चाँद-तारे तोड़ने वाली बात है। वहीं दूसरी ओर साधारण सा दिखने वाला आम आदमी कब हमारे हृदय के साथ आत्मीयता स्थापित कर देता है, इससे हम अवगत भी नहीं हो पाते हैं।

हमारे मुश्किल की घड़ी या जरूरत पड़ने पर यह आम आदमी ही विशेष बनकर उभरता है और हमारी मदद करता है। कई बार तो वह अपने स्तर से बहुत ऊपर उठकर हमारी मदद करता है। उभरते हुए क्रिकेटर ऋषभ पंत को ही ले लीजिए। कार दुर्घटना के समय उस हाईवे पर कितनी महंगी और लंबी गाड़ियाँ गुजरी होंगी पर उनकी मदद एक ट्रक वाले ने की और वह मदद पंत के लिए नवीन जीवन प्रदायिनी बनकर उभरी।

कई बार असाधारण बनने की होड़ में हम साधारण व्यक्ति और उसके योगदान को भूल जाते हैं और हमेशा दूर से दिखने वाले चकाचौंध पर ही टकटकी लगाए रखते हैं। मॉल में तो हम महँगे कपड़े और सामान खरीदने में नहीं हिचकिचाते मगर छोटे दुकानों में जाते ही मोलभाव का दांवपेच शुरू कर देते हैं। होटलों में हम टिप देने में अपनी शान समझते हैं, वहीं छोटे-छोटे जगहों पर सामान को लेकर मोलभाव करते हैं।

पिछले वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी हम घूमने निकले। पूरा वर्ष का काम इस आशा में निकल जाता है कि वर्ष में एक बार बाहर घूमने जाना है। वर्ष भर का कार्य और परिवार के साथ बिताए गए सुकून के पल मन को तरंगित कर देते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी से अलग दिन-रात मुझे बहुत पसंद है।

वैसे परिवार के सब लोग पूरी चुस्ती-फुर्ती से काम करें इसकी पूरी जिम्मेदारी मुझ पर ही रहती है गृहणी हूँ ना। बच्चे स्कूल वक्त जाए इसके लिए मैं रोज सुबह उठती हूँ। उसे सही पोषण मिले इसके लिए



उसे प्रोटीन युक्त टिफिन देती हूँ। पति दफ्तर में अपना कार्य पूरी ऊर्जा के साथ करें, इसके लिए उनके खाने-पीने का पूरा दायित्व मैंने अपने ऊपर ले रखा है। वैसे यह सब रोज अपनो के लिए करना मुझे अच्छा लगता है पर कभी-कभी समय खुद के लिए भी निकालना बेहतर होता है।

इस वर्ष हमलोग घूमने के लिए प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पुरी धाम, ओड़िशा गए। कहते हैं कि जब तक भगवान का बुलावा न आए तब तक हम चाह कर भी भगवान के दर्शन-लाभ नहीं ले सकते हैं। भगवान जगन्नाथ नाथों के नाथ हैं। कहते हैं इस कलयुग में भी प्रभु जगन्नाथ साक्षात् विराजमान हैं। सच में पुरी धाम के कण-कण में भक्ति विराजती है। हृदय को अपूर्व शांति का अनुभव करवाती यह जगह मन को भक्ति से ओत-प्रोत कर देती है। 'जय जगन्नाथ' का जयकारा धड़कन को तीव्र कर देता है। शरीर का रोम-रोम सकारात्मकता से ओत-प्रोत हो उठता है। समुद्र से उठती हुई लहरें मन में आशा की नई किरण को सृजित करती हैं। मन के समस्त विकारों का नाश होता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे अब जीवन अपने पूरे वेग से युवा होकर सबलता और सफलता की नवीन कहानी के स्वर्णिम अक्षरों का निर्माण करेगा। श्री जगन्नाथ के अद्भुत एवं अद्वितीय दर्शन किए।



श्लोका उस समय 2 वर्ष की थी। भूख भी अपने चरम पर थी। हमारे होटल के पास एक बड़ा रेस्टोरेंट था जहाँ हम लोगों ने डिनर किया। और बड़े प्यार से वहाँ का मैनेजर हमारे आर्डर पर श्लोका के लिए एक गिलास दूध ले आया। क्योंकि घर से निकलते समय फॉर्मूला दूध छूट गया था। बच्चों को खाता देखकर जिस संतोष की प्राप्ति होती है वह अपना पेट भर कर नहीं होती है। दिन भर की थकान के बाद हमें नींद बहुत अच्छी आई। फिर सुबह नई ताजगी के साथ हम फिर घूमने निकल पड़े।

नई जगह अपने आंचल में बहुत सारा नयापन बांधकर रखती है। जैसे-जैसे हमें नई चीजों के



बारे में जानकारी मिलती है मन रोमांचित हो उठता है। पृथ्वी के गर्त में इतने रहस्य हैं कि जितना हम उसे सुलझा हुआ पाते हैं उससे कई गुना ज्यादा हम उलझा हुआ भी पाते हैं। घूमते-घूमते हमें एक रेस्टोरेंट दिखा जहाँ हमने रात का खाना खाया लेकिन वहाँ सिर्फ खाना मिल सकता था दूध नहीं, सुनकर आश्चर्य हुआ पर हमने सोचा कोई बात नहीं जहाँ कल दूध लिया था वहाँ फिर मिल जाएगा। चूँकि हम खाने का ऑर्डर कर चुके थे तो कैंसिल नहीं किया। जब पहले वाले रेस्टोरेंट पहुँचे तो वहाँ जाकर पता चला कि अगर यहाँ हम डिनर नहीं करेंगे तो बच्चे के लिए दूध भी नहीं मिलेगा। इस बात पर मुझे गुस्सा आया तो मामले को रफा-दफा करने के उद्देश्य से मैनेजर ने कहा कि 'दूध नहीं है मैडम'। हम फिर वहाँ से लौटकर एक दुकान पर गए और एक दूध का पैकेट खरीदा। फिर उसी रेस्टोरेंट में पहुँचे क्योंकि रात हो चुकी थी और सभी दुकानें और रेस्टोरेंट बंद हो रहे थे। दूध का पैकेट देखकर मैनेजर ने कहा 'सॉरी मैडम, बहुत सारे कस्टमर खाने का वेट कर रहे हैं तो हम दूध गर्म भी नहीं कर सकते'। मैंने बहुत आग्रह किया क्योंकि लगभग सभी रेस्टोरेंट बंद हो चुके थे। पर मैनेजर का वही रवैया रहा। मैंने दूध गर्म करने के रूप भी ऑफर किए पर शायद वो लोगों के डिनर के पैसे से कम पड़ रहा होगा। मैनेजर टस से मस न हुआ। बीच रास्ते पर हम दूध का पैकेट लिए खड़े थे। और अब श्लोका को भी भूख लग गई थी। उसका स्वर भी सातवें आसमान पर था।

हम लगभग हर दुकान में जा रहे थे और विनम्रता से कहीं ज्यादा लाचारी वाले शब्दों में दूध गर्म करने की गुहार लगा रहे थे और बदले में क्रूरता के साथ इंकार कर दिया जा रहा था। हाँ.... 'क्रूर', हर वह इंसान क्रूर लग रहा था जो नकारात्मक उत्तर दे रहा था। मैं अपने आपको निहायती कमजोर और लाचार समझ रही थी। ऐसा लग रहा था कि कहीं से कुछ जादू ही हो जाए और कोई कह दे कि 'दूध गर्म हो जाएगा'। हम अपनी भूख तो बर्दाश्त कर सकते हैं पर बच्चों को भूखा रखना हमें तिलमिला सा देता है। मैं तो उन दुकानों में भी जाकर पूछ रही थी जहाँ खाने-पीने की चीजें तक न थी।

कई दुकानदार तो ऐसा व्यवहार कर रहे थे कि कहीं मैं पागल तो नहीं हूँ। पर आज मुझे वह भी मंजूर था। कोई मेरे बारे में क्या सोचता है उससे कहीं ज्यादा मुझे यह फिक्र थी कि श्लोका कहीं बिना खाए-पिए सो न जाए। कैसे वह भूख सह रही होगी। यह सोच-सोच कर मैं और असंयमित सी होती जा रही थी। आज मैं ऐसी याचक बन गई थी जिसे हर दुकान, हर इंसान से आशा थी। मैं हर दुकानदार को आशा भरी नजरों से देख रही थी। मगर हर आशा को सकारात्मक मंजिल प्राप्त हो यह आवश्यक नहीं है। रात का अंधेरा ममता के रोशनी को कतई कम नहीं कर सकता है। मैं हृदय के एक कोने में आशा की दीपक जलाए हर संभव प्रयास कर रही थी।



मैं अपने को कोस रही थी कि मैं फॉर्मूला दूध कैसे भूल गई। चाहे कोई कुछ भी ले ले पर बच्चे की भूख बर्दाश्त नहीं होती। पर मैं आज बेबस लग रही थी। रास्ते पर चलते-चलते एक चाय की दुकान दिखी जहाँ एक बूढ़ा, मरियल सा व्यक्ति अपने कंपकपाते हुए हाथों से चाय बना रहा था। उसके चूल्हे को छेक कर चार पाँच लोग चाय के लिए खड़े थे।

चाचा दूध गर्म कर देंगे क्या? अपनी झूलती हुई गर्दन को उठाते हुए आँखों के इशारे से हामी भरी। उनकी यह हामी मेरे अपराध बोध हृदय को बरी करती हुई सी लगी। अपनी चाय की पतीली को उतारते हुए दूसरी साफ पतीली चूल्हे पर बिठाई। दूध के पैकेट को डाला और मुझसे पूछा, 'बिटिया चीनी वाला दूध पीती होगी न, एक चम्मच डाल दूँ।' मैं चाचा की उदारता देखकर नतमस्तक हो गई। आज चाचा द्वारा किया गया यह कार्य उनको मानवीय गुणों के शिखर पर विराजमान करता है। मेरे समक्ष एक वह होटल का मैनेजर था जिसमें न मानवीयता थी और न ही सामाजिकता। वहीं दूसरी ओर छोटी सी दुकान वाले चाचा थे जो अपने छोटे से कार्य से आदरणीय हो गए।

कई बार मनुष्य को हम उसके ओहदे से आँकते हैं क्या वाकई यह तर्कसंगत है? एक आम आदमी वास्तव में कितना ख़ास होता है, इसका अंदाजा हमें आज लगा।



तिष्ण की निश्छल भक्ति



श्री प्रत्यूष अवस्थी
सहायक लेखाधिकारी

दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश के वर्तमान चित्तूर जिले के क्षेत्र में कभी भयानक महारण्य हुआ करता था। इसी जंगल में एक पहाड़ी थी और उसकी तलहटी में बहती थी स्वर्णामुखी नदी जो वास्तव में पेन्नार नदी की शाखा मात्र थी।

इस क्षेत्र में चरिष्णु आखेटक जाति निवास करती थी जिसकी उत्तर भारतीय शाखा को कालांतर में अपभ्रंश में खटीक कहा जाने लगा। आखेट कर वनक्षेत्र के सीमांत पर लगने वाली दैनिक हाट में माँस व चर्म की आपूर्ति करना उनका व्यवसाय था। शिव को अपना आराध्य मानने वाली खटीक जाति की इस शाखा के सरदार का नाम था नाग और उसकी पत्नी का नाम था तत्ता। नगरीय जीवन से असंपृक्त वन्य जीवन में वे और उनका कबीला पूरी तरह मस्त थे। उनके जीवन की एकमात्र कमी अगर थी तो यही थी कि उनके कोई संतान नहीं थी।

अंततः बहुत दिनों के बाद उनके जीवन की यह इच्छा भी पूर्ण हुई और उन्हें एक पुत्र उत्पन्न हुआ। परंतु वह सामान्य शिशुओं की तुलना में बहुत भारी था अतः उसका नाम रखा गया तिष्ण अर्थात् भारी।

सोलह वर्ष की आयु तक तिष्ण धनुष—बाण, भाला, तलवार आदि के संचालन में निपुण हो गया। अपने कबीले की प्रथानुसार वह नियमित रूप से शिकार पर भी जाने लगा। इसी क्रम में वह एक दिन हमेशा की तरह आखेट को निकला। बहुत से जानवर मारने के बाद उसने घने जंगल में एक सूअर का शिकार किया। वहीं उसके दो नौकर नाड़ और काड उससे आ मिले। उन्होंने सूअर को उठा लिया और बढ़ चले। रास्ते में उनको जोरों की भूख—प्यास लगी।

तिष्ण ने पूछा— ‘यहाँ मीठा पानी कहाँ मिलेगा? तुम्हें कुछ पता है?’

नाड़ बोला— ‘उस विशाल शालवृक्ष के उस पार एक पहाड़ी है और उसी के नीचे सुवर्णामुखी नदी बहती है।’ तीनों चल पड़े।

नदी के तट पर खड़े होकर उसने पहाड़ी की ओर देखा।



बचपन से ही वह अपने माता पिता से सुनता आया था कि इस पहाड़ी पर उसके देवता निवास करते हैं और उसके बालमन ने कई बार इस पहाड़ी पर आकर देवता को देखना चाहा था पर कभी आ न सका था। पर आज संयोगवश स्वतः ही यहां आ पहुंचा था।

उसके बालमन में दबी इच्छा प्रबल हो उठी और अंतश्चेतना के वशीभूत हो वह पहाड़ी पर चढ़ने लगा। उसे लग रहा था जैसे कोई उसे चुम्बकीय शक्ति से ऊपर खींच रहा है। उसके दोनों मित्रों ने भी उसका अनुसरण किया।

पर्वत पर दुःसाध्य चढ़ाई जैसे उसकी आत्मा का आरोहण बन गई। उसे ना भूख का अनुभव हो रहा था और ना प्यास का। वह स्वयं को वायु सा हल्का पा रहा था और एक आतुर प्रयत्न के साथ ऊपर चढ़ता जा रहा था। अन्ततः वह ऊपर पहुँचा और ठगा सा रह गया। सामने था एक जीर्ण शीर्ण मंदिर और उसके खुले कपाट में से दर्शन देते महादेव शिव का विग्रह। वह उस पाषाण प्रतिमा में अपने देव को जीवंत रूप में देख पा रहा था।

तिष्ण कुछ पल एकटक देखता रहा और फिर उसकी आँखों से आँसू बह निकले। वह दौड़ पड़ा और अपने महादेव से लिपट गया।

“ऐसे घोर वन में जंगली जन्तुओं के बीच तुम्हें डर नहीं लगता? किसने तुम्हें यहां अकेले छोड़ दिया है? कोई मित्र भी तुम्हारे पास नहीं है।”

उसका धनुष सरककर गिर गया और तूणीर निकलकर गिर गया। वह विह्वल हो उठा।

उसी विह्वल अवस्था में उसने भरी आँखों से देवता के श्रीविग्रह का अवलोकन किया। देवविग्रह के ऊपर कुछ हरे पत्ते, जंगली फूल और शीतल जल देखकर वह पहले दुःखित और फिर क्रुद्ध हो गया — ‘किस नराधम ने मेरे स्वामी के सिर पर ये चीजें रखी हैं?’

नाड़ ने उत्तर दिया— ‘आपके पिता के साथ मैं यहाँ बहुत बार आया हूँ। हमने एक ब्राह्मण को यह करते देखा था। उसने देवता के सिर पर ठंडा पानी डाल दिया और फूल—पत्तियाँ रख दीं। आज भी जरूर यह उसने ही किया होगा।’

‘वह मूर्ख तुम्हें ये घास—पत्ती अर्पित करता है। कैसे पेट भरता होगा तुम्हारा ? जाने कब से भूखे बैठे हो तुम?’ वह स्वगत बुदबुदाया।

‘तुम बस कुछ पल प्रतीक्षा कर लो, मैं तुम्हारे खाने के लिये कुछ लाता हूँ।’ और वह बाहर की ओर चल पड़ा।

तिष्ण मंदिर से रवाना हुआ, मगर तुरंत ही लौट आया। वह बार—बार जाने की कोशिश करता था,



किंतु किसी अनजान आकर्षण से वशीभूत हो बार बार लौट आता।

अंततः वह नीचे उतरा और उसने सूअर के मांसखंडों को भूना। साल के पत्तों में लपेटकर ऊपर जाने को उद्यत हुआ। उसके मित्र उसे विक्षिप्त मानकर निराश हो लौट गये। वे उसे समझाते भी कैसे क्योंकि जो विग्रह उनके लिये पाषाण का एक टुकड़ा था वह तिण्ण के लिये पूर्ण चौतन्य था जिसमें वह अपनी ही चेतना को देव रूप में देख रहा था।

तिण्ण अपनी ही धुन में मग्न था। संसार उसके लिये तिरोहित हो चुका था।

फिर सहसा उसे नाड़ द्वारा वर्णित उस ब्राह्मण की पूजन विधि याद हो आई और उसने पूजन की तैयारी शुरू की। अपने बालों में उसने कुछ जंगली सुगन्धित फूल खोंसे, मुँह में नदी का ताजा पानी भर लिया क्योंकि उसके पास कोई बरतन नहीं था। एक हाथ में उसने मांस लिया व दूसरे में अपना धनुष और दोपहर की उस कड़ी धूप में पहाड़ पर चढ़ने लगा।

‘मेरे देवता भूखे हैं।’ उसकी चेतना में बस यही चार शब्द गूँज रहे थे और वह दौड़ने लगा। जूते उतारने का उसके पास समय नहीं था। हाथ खाली नहीं थे, सो पैरों से ही चढ़ाई हुई फूल पत्तियाँ हटा दीं। मुंह से पिचकारी से धार बनाकर उसने देवता को प्रेम से स्नान कराया। और फिर देवता के आगे चखकर सबसे अच्छे भुने मांस के टुकड़ों को रखकर खाने का आग्रह किया।

इस मनुहार के बीच अँधेरा हो आया।

‘यह समय तो जंगली जानवरों के घूमने का है। देवता को यहाँ अकेले छोड़कर मैं नहीं जा सकता।’ वह धनुष पर बाण चढ़ाकर वीरासन से बैठ गया।

सबेरा होने पर जब चिड़ियाँ चहचहाने लगीं, तब वह उठा।

‘अच्छी नींद आई ना?’ वह प्रफुल्लित था।

‘अच्छा आज तुम्हें मृग का सुस्वादु मांस खिलाऊँगा।’ वह पहाड़ी से उतर गया।

ब्राह्मण पुजारी, नियमानुसार प्रातःकाल मंदिर में आया। मन्दिर में जूतों की छाप तथा चारों ओर मांस छितराया देखकर वह बहुत ही घबरा गया, ‘हे, भगवन्! अब मैं क्या करूँ? किसी जंगली शिकारी ने मन्दिर भ्रष्ट कर दिया है!’ लाचार उससे झाड़-बुहार कर साफ किया। मांस के टुकड़े कहीं पैरों से छू न जाय, इसलिये उसे बड़ी कठिनता से इधर-उधर चलना पड़ता था। फिर वह नदी में स्नान करके लौटा और मन्दिर की सम्पूर्ण शुद्धि की। आँखों में आँसू भरकर देवता के आगे प्रणिपात किया और वेद-ऋचाओं से परमात्मा की स्तुति की। पूजा समाप्त करके वह अपने आवास को लौट गया।

इधर तिण्ण ने एक हिरण का शिकार किया और पिछले दिन के समान चुनकर मांस पकाया



अच्छे—अच्छे टुकड़े अलग रख लिये।

‘आज देवता को और स्वादिष्ट भोजन कराऊंगा।’

और उसने कई अच्छे ताजे मधु के छत्ते इकट्ठे किये, उनका मधु मांस में निचोड़ा। फिर वह मुँह में पानी भरकर, बालों में फूल खोंसकर, एक हाथ में मांस लिये हुए और दूसरे में धनुष—बाण लेकर पहाड़ पर दौड़ा।

‘देवता! कल से आज का मांस स्वादिष्ट है। ‘उसमें मधु भी मिलाया है मैंने।’ गर्व से तिण्ण ने देवता से कहा।

इस तरह तिण्ण के पाँच दिन, दिनभर शिकार करके देवता के लिये मांस इकट्ठा करने और रातभर पहरा देने में बीते। उसे स्वयं खाने—पीने की सुध ही न रही। तिण्ण के चले जाने के बाद प्रतिदिन पुजारी आता और रात के इस भ्रष्टाचार पर विलाप करता, मन्दिर धोकर साफ करता, नदी—स्नान करके शुद्धि करता और पूजा—पाठ करके अपने स्थान पर लौट जाता। इधर जब इतने दिनों तक तिण्ण नहीं लौटा, तब उसके सभी सम्बन्धी और मां—बाप निराश हो गये।

ब्राह्मण पुजारी रोज ही हार्दिक प्रार्थना करता, “प्रभु! मेरे पाप क्षमा करो। ऐसा भ्रष्टाचार रोको।”

और तब एक रात स्वप्न में शिव उनके सामने आये, ‘तुम मेरे इस प्रिय शिकारी भक्त को नहीं जानते। वह निरा शिकारी ही है पर पूर्ण प्रेममय है। वह मेरे सिवा और कुछ जानता ही नहीं। वह जो कुछ करता है, मुझको प्रसन्न करने के लिये ही। जब वह अपने जूते की नोक से मेरे सिर पर से सूखे फूल हटाता है, तब उसका स्पर्श मुझे कार्तिकेय के स्पर्श से भी अधिक प्रिय लगता है। जब मुझ पर वह प्रेम और भक्ति से कुल्ला करता है, तब वह कुल्ले का पानी मुझे गंगाजल से भी अधिक पवित्र जान पड़ता है। वह अनपढ़ सच्चे स्वाभाविक प्रेम और भक्ति से जो फूल अपने बालों में निकालकर मुझ पर चढ़ाता है, वे मुझे नंदनवन के पारिजात पुष्पों से भी अधिक सुगंधित जान पड़ते हैं। और अपनी मातृभाषा में वह आनन्द और भक्ति से भरकर जो थोड़े से शब्द कहकर, मेरे सिवा सारी दुनिया का भान भूलकर मुझे प्रसाद पाने को कहता है, वे शब्द मेरे कानों में ऋषि—मुनियों के वैदिक स्तुतियों के शब्दों से कहीं अधिक मीठे लगते हैं। यदि उसकी भक्ति का महत्त्व देखना हो तो कल आकर छिपकर खड़े हो जाना।’

इस स्वप्न के बाद पुजारी को रातभर नींद नहीं आयी। प्रातःकाल वह नियमानुसार मंदिर में पहुँचा और पूजा—पाठ समाप्त करके एक स्तंभ के पीछे जा छिपा। तिण्ण की पूजा का यह छठा दिन था। और दिनों से आज उसे कुछ देर हो गयी थी। क्योंकि रास्ते में उसे अपशकुन हुए थे और उनके अर्थों के अनुसार आज कहीं खून गिरना था।



‘कहीं देवता को कुछ हुआ तो नहीं?’ और वह दौड़ा।

इसकी आशंका सत्य सिद्ध हुई। देवता की एक आँख से खून बह रहा था।

अपने अपशगुन को पूरा होते देखकर उसके शोक का पार न रहा। हाय! देवता को कितना कष्ट हो रहा था।

तिण्ण यह दुःखद दृश्य नहीं देख सका। वह रोने, विलाप करने लगा। जमीन पर लोटने लगा। फिर उठा। उठकर भगवान् की आँख से खून पोंछ दिया, परन्तु तो भी खून का बहना रुका नहीं। वह फिर दुःखातुर होकर गिर पड़ा!

तिण्ण बिलकुल ही घबरा गया। उसका चित्त अत्यन्त दुःखी हो गया। वह समझता नहीं था कि क्या करना चाहिये। थोड़ी देर बाद वह उठा और तीर-धनुष लेकर उस आदमी या जानवर को मारने निकला, जिसने देवता की यह दुर्दशा की हो। परन्तु उसे कहीं कोई प्राणी नहीं दिखलायी पड़ा। वह लौट आया और विग्रह को छाती से लगा करके विलाप करने लगा।

उसे कुछ जड़ी-बूटियों की याद आयी, जिन्हें उसकी जाति के लोग घावों पर लगाते थे। वह दौड़ा और जब लौटा तो जड़ी-बूटियों का एक गड्ढर लेकर। उन्हें उसने देवता की आँख में एक-एक कर निचोड़ दिया, पर इससे कुछ लाभ नहीं हुआ।

फिर उसे सहसा शिकारियों की कहावत याद आयी, ‘मांस का घाव मांस से ही अच्छा होता है।’

यह ख्याल आते ही उसके मन में आनन्द की नयी उमंग खेलने लगी। उसने देर न की। एक तेज बाण की नोक से अपनी दाहिनी आँख निकाली और भगवान की आँख पर धीरे से धरकर उसे दबाया।

खून का बहना रुक गया!

वह आनंद से नाच उठा। उसकी असीम प्रसन्नतापूर्ण हँसी और आनन्दध्वनि से मन्दिर गूँज उठा।

पर यह क्या? बाँयीं आँख से भी खून बहने लगा।

पर तिण्ण इस बार निश्चिंत रहा। उसे पता था कि उसे क्या करना है।

उसने देवता की बाँयीं आँख पर अपना बायाँ पैर रखा जिससे उसे पता चले कि कहाँ आँख लगनी है, क्योंकि आँख निकालने के बाद उसे कुछ दिखाई नहीं देगा।

उसने अब आँख के कोने में तीर की नोक लगायी।

समस्त ब्रह्मांड उसके इस निश्छल और भीषण संकल्प पर कांप गया। देवाधिदेव प्रकट हुये और तिण्ण का हाथ पकड़कर रोक लिया।

“ठहरो मेरे कण्णप्प! ठहर जाओ।”



कण्णप्प का हाथ पकड़कर उसे अपने पास खींच लिया और कहा, 'प्रेम की मूर्ति कण्णप्प! तुझे कुछ मैं दे सकूँ यह मेरी सामर्थ्य नहीं क्योंकि मैं स्वयं ही तेरे प्रेम में वशीभूत हो चुका हूँ। परन्तु फिर भी मेरे संतोष के लिये कुछ स्वीकार कर।'।

'मुझे सेवक के रूप में स्वीकार करें।' गदगद वाणी में तिण्ण बोला।

प्रकाश का वर्तुल उठा और भक्त व भगवान एकरूप हो गये।

पीछे बचे अश्रु बहाते वृद्ध पुजारी, कण्णप्पेश्वर का पुनीत स्थल और दक्षिण भारत के 63 महान नयनार संतों में से एक नयनारसंतकण्णप्प की भक्ति गाथा।



आँखों ने सब देखा

Ruskin bond "The eyes have it" का हिंदी अनुवाद



सुश्री साधना राय
हिंदी अधिकारी

रोहाना तक मैं ट्रेन के डिब्बे में अकेला था, फिर एक लड़की ट्रेन में चढ़ी। जो जोड़ा उसे छोड़ने आया था संभवतः उसके माता-पिता थे। वे उसके आराम को लेकर काफी चिंतित दिखे और महिला ने लड़की को लंबी चौड़ी हिदायत दी कि कहाँ उसे अपना सामान रखना है, कब खिड़की के बाहर नहीं झांकना और कैसे अपरिचित से बात नहीं करनी।

उन्होंने लड़की को विदा किया और ट्रेन स्टेशन के बाहर निकल पड़ी। चूंकि उस समय मैं पूरी तरह से अंधा था, मेरी आँखें सिर्फ उजाले और अंधेरे को लेकर संवेदनशील थीं, मैं बताने में असमर्थ हूँ कि लड़की कैसी दिखती थी। परंतु उसकी एड़ियों से टकरा कर जो आवाज़ आ रही थी उससे मैं जानता हूँ कि उसने हवाई चप्पल पहना हुआ था।

उसके रूप के बारे में कुछ जानने के लिए मुझे थोड़ा समय लगेगा और संभवतः मैं कभी नहीं बता सकूँगा। पर मुझे उसकी आवाज़ अच्छी लगी और उसके चप्पल की आवाज़ भी अच्छी लगी।

‘क्या आप देहरा तक जा रही हैं?’ मैंने पूछा।

मैं ज़रूर किसी अंधेरे कोने में बैठा था क्योंकि मेरी आवाज़ ने उसे चौंका दिया। उसने थोड़े विस्मय के बाद कहा, ‘मैं नहीं जानती थी कि कोई और भी यहाँ है’।

ऐसा अक्सर होता है कि जिन लोगों के आँखों की रोशनी अच्छी होती है वे अपने ठीक सामने क्या है नहीं देख पाते। मुझे लगता है, उन्हें बहुत कुछ देखना समझना होता है। जबकि वे लोग जो देख नहीं सकते (या बहुत कम देखते हैं) को सिर्फ आवश्यक चीज़ें ही देखनी समझनी होती हैं, जो उनकी बची हुई इंद्रियों पर स्पष्ट रूप से अपना प्रभाव डालती हैं।

‘मैंने भी आपको नहीं देखा’, मैंने कहा। ‘पर मैंने आपके आने की आहट सुनी’।

मैंने सोचा क्या पता मैं उससे अपना अंधापन छुपा पाऊँगा या नहीं। मैंने सोचा यदि मैं अपनी सीट पर ही बैठा रहूँ तो छुपाने में ज्यादा मुश्किल नहीं होनी चाहिए।

लड़की ने कहा, ‘मैं सहारनपुर उतरूँगी। मेरी चाची मुझे वहाँ लेने आएंगी’।



‘फिर अच्छा हुआ कि मैंने ज्यादा घनिष्ठता नहीं बढ़ाई, मैंने कहा। ‘सामान्यतः चाचियाँ विकट प्राणी होती हैं’।

‘आप कहाँ जा रहे हैं?’ उसने पूछा।

‘पहले देहरा और फिर मसूरी’।

‘ओहः, कितने भाग्यशाली हैं आप। काश मैं भी मसूरी जाती।

मुझे घाटियां बहुत पसंद हैं। खासकर अक्टूबर में’।

अपनी पहले की स्मृतियों के आधार पर मैंने कहा, ‘हाँ ये सबसे अच्छा समय होता है’। घाटियां जंगली डलिया के फूलों से ढँकी होती हैं, सूर्य की गर्माहट बहुत अच्छी लगती है, और रात को आप आग के सामने बैठ सकते हैं और थोड़ी ब्रांडी भी पी सकते हैं। ज्यादातर सैलानी चले गए होते हैं और रास्ता शांत और लगभग सुनसान हो गया होता है। हाँ, अक्टूबर सबसे अच्छा समय है’।

वह शांत थी। मैंने सोचा शायद मेरे शब्दों पर मोहित है या फिर मुझे रूमानी मूर्ख समझ रही होगी। फिर मैंने एक गलती की।

‘बाहर कैसा दिख रहा है?’ मैंने पूछा।

उसे प्रश्न में कुछ भी विचित्र नहीं लगा। क्या उसने पहले ही समझ लिया था कि मैं देख नहीं सकता? पर उसके अगले प्रश्न ने मेरा संदेह दूर कर दिया।

‘आप खिड़की से बाहर क्यों नहीं देख लेते?’ उसने पूछा।

मैं आराम से बर्थ से सटकर आगे बढ़ा और खिड़की का किनारा महसूस किया। खिड़की खुली हुई थी और उसकी तरफ अपना मुँह कर, मैंने परिदृश्य समझने का नाटक किया। मैंने सुना इंजन की भक-भक आवाज, पहियों की गड़गड़ाहट, और अपने मन की आँखों से एक तार का खंभा गुजरते देखा। ‘क्या आपने ध्यान दिया,’ मैंने शुरुवात की, कि पेड़ भागते हुए और हम एक जगह पर खड़े प्रतीत हो रहे हैं?’

‘यह हमेशा होता है,’ उसने कहा। ‘क्या आपको कोई जानवर दिखा?’

‘नहीं, मैंने आत्मविश्वास से उत्तर दिया। मैं जानता था कि देहरा के पार जंगल में शायद ही कोई जानवर बचा हो।

मैं खिड़की से हटा और लड़की की तरफ मुखातिब हुआ और कुछ देर हम चुपचाप बैठे रहे।

‘आपका चेहरा मजेदार है, मैंने कहा। मैं साहसी हो रहा था परंतु यह एक सुरक्षित टिप्पणी थी। कुछ ही लड़कियां खुशामद को नजरंदाज़ कर पाती हैं। वो खुशी से हंसने लगी। एक साफ, खनकती



हंसी।

‘मेरा चेहरा रोचक है सुनकर अच्छा लगा। मैं लोगों से सुन-सुन कर थक गई हूँ कि मेरा चेहरा खूबसूरत है’।

ओह, तो आपका चेहरा खूबसूरत है, मैंने सोचा। और जोर से मैंने कहा : वैसे रोचक चेहरा खूबसूरत भी हो सकता है’।

‘आप बहुत ही रंगीले इंसान हैं,’ उसने कहा। ‘पर आप इतने गंभीर क्यों हैं?’

उस समय मैंने सोचा कि मैं उसके लिए हंसने की कोशिश करूंगा परंतु हंसने की सोच मुझे अशांत और अकेला कर देती है।

‘हम जल्दी ही आपके स्टेशन पर होंगे,’ मैंने कहा।

‘भगवान का शुक्र है कि यह छोटी यात्रा थी। मैं ट्रेन में दो या तीन घंटों से ज्यादा नहीं बैठ सकती’।

हालांकि मैं सिर्फ उसे बात करते हुए सुनने के लिए यहाँ कितनी भी देर बैठने को तैयार था। उसकी आवाज में पहाड़ के झरनों सा जोश था। ट्रेन से उतरते ही वो इस छोटी सी मुलाकात को भूल जाएगी। पर मेरे साथ ये याद पूरी यात्रा तक रहेगी और उसके बाद भी कुछ समय के लिए।

इंजन ने सीटी दी, वाहन के पहियों ने अपनी आवाज और गति बदली, लड़की उठी और अपना समान संजोने लगी। मैंने सोचा कि शायद उसने अपने बालों का जूड़ा बनाया होगा या चोटी की होगी। मुमकिन है बाल खुले होंगे और उसके कंधों पर झूल रहे होंगे। या क्या वे छोटे कटे हुए हैं?

ट्रेन धीमी गति से स्टेशन पर पहुंची। बाहर कुलियों और विक्रेताओं की चिल्लम चिल्ली और ट्रेन के दरवाजे पर महिला की ऊंची आवाज। वह आवाज जरूर ही लड़की की चाची की होगी।

‘चलती हूँ,’ लड़की ने कहा।

वो मेरे बिल्कुल पास खड़ी थी। इतने पास कि उसके बालों की खुशबू मदहोश कर रही थी। मैं अपना हाथ उठाकर उसके बालों को छूना चाहता था पर वो चली गई थी। केवल उसके इत्र की खुशबू अब भी ठहरी रही जहां वो खड़ी थी।

दरवाजे की तरफ गलियारे में कुछ हल्ला मचा था। एक व्यक्ति ने जो डिब्बे में घुस रहा था, माफी मांगी। फिर दरवाजा जोर से बंद हुआ और संसार फिर से मेरे लिए बंद हो गया। मैं अपनी बर्थ पर लौट आया। गार्ड ने सीटी बजाई और हम निकल पड़े। यात्रा में एक नया साथी और एक बार फिर मुझे एक खेल खेलना था।



ट्रेन ने गति पकड़ी, पहियों ने अपना गाना शुरू किया, वाहन खड़खड़ाने और हिलने लगा। मैंने खिड़की ढूँढी और उसके सामने बैठ गया, उजाले को निहारते हुए जो कि मेरे लिए अंधेरा था। कितना कुछ खिड़की के बाहर घट रहा था। यह अंदाज़ा लगाना कि बाहर क्या हो रहा है एक दिलचस्प खेल हो सकता है। व्यक्ति, जो डिब्बे में घुसा, ने मेरे दिवास्वप्न में संध लगाई।

‘आप बहुत निराश हुए होंगे न,’ उसने कहा। मैं आपके पहले वाले सह यात्री की तरह आकर्षक नहीं हूँ।

‘वह काफी मजेदार लड़की थी,’ मैंने कहा। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि उसने अपने बाल लंबे रखे हुए थे या छोटे?’

‘मुझे याद नहीं,’ उसने उलझन में कहा। ‘मैंने उसकी आँखों पर ध्यान दिया, उसके बालों पर नहीं। उसकी आँखें बहुत खूबसूरत थीं पर वे उसके किसी काम की नहीं थीं। वो पूरी तरह से अंधी थी। क्या आपने ध्यान नहीं दिया?’



बढ़ती गर्मी या घटते पेड़



सुश्री आकृति कुशवाहा

पुत्री— श्री अनूप कुमार

वरिष्ठ लेखाकार



कभी सोचा नहीं था
एक ऐसा दौर भी आएगा,
पेड़ की जगह,
तार छा जाएगा ।

उबलते पानी का तापमान हम इंसानों के लिए असह्य होता है परंतु इस वर्ष की गर्मी को देख कर लगा कि हम उबलने के बहुत करीब हैं। साल 2023 में सबसे अधिक तापमान 50 डिग्री था, जब लोगों ने बिना आग जलाए सूर्य के ताप में बर्तन को रख कहीं चाय बनाई तो कहीं अंडों के ऑम्लेट बने। इस गर्मी को झेलना बहुत मुश्किल था पर हम लोगों ने झेला ।

परंतु मुद्दा यह नहीं है कि गर्मी इतनी है बल्कि प्रश्न यह है कि इतना अधिक क्यों है तापमान? इसका उत्तर पाने के लिए हमें थोड़ा इतिहास में जाना होगा ।

पहले जब लोग गाँव में रहा करते थे तब खेती करते और ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाते थे और उसकी वजह से हवा बहुत शुद्ध रहती थी ओर बारिश होती थी जिससे गर्मी और सर्दी का संतुलन एक समान होता था, न ज्यादा न कम ।

अब असली सवाल आता है कि गर्मी बढ़ क्यों रही है? पृथ्वी पर अगर तापमान की बात करें तो यह पृथ्वी के घूमने की वजह से होता है। हमें इस तरह समझना होगा कि पृथ्वी चक्कर लगाती है, अपने अक्ष पर और सूरज के चारों ओर और पृथ्वी पूरी तरह से गोल नहीं है, चक्कर लगाते वक्त जो हिस्सा पृथ्वी का सीधा पड़ता है वह ज्यादा गर्म होता है और जो हिस्सा तिरछे पड़ता है उधर गर्मी कम होती है। जो भी हो दिनों—दिन गर्मी बढ़ती ही जा रही है इसके कई कारण हो सकते हैं, भूमण्डलीय ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग), ग्रीन हाउस गैस के वातावरण में ज्यादा होने से हो सकता है। ग्लोबल वार्मिंग पेड़ों को काटने, फैक्टरी के धुएँ, गाड़ियों के धुएँ, कंडे को जलाने आदि इन सब क्रियाओं जिनसे हानिकारक गैस



निकलती है उससे धरती का तापमान बढ़ रहा है। क्या कभी हमने सोचा है कि जो ए. सी. हम इस्तेमाल करते हैं उससे इतनी हानिकारक गैस निकलती है जो की हमारे लिए बहुत नुकसानदेह मानी जाती है। चारकोल की सड़क और सीमेंट की इमारतें धूप के सभी कणों को अपने अंदर सोख लेते हैं और रात में उसे छोड़ते हैं जिससे गर्मी और बढ़ती है।

इस गर्मी को कम, तो नहीं किया जा सकता परंतु यहीं रोका जरूर जा सकता है। निर्माण में सीमेंट की जगह ऐसे पदार्थ का इस्तेमाल करके जिससे वातावरण का भी नुकसान न हो और न ही पेड़ों को काटना पड़े। हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने होंगे नहीं तो एक दिन ऐसा आएगा कि साथ में चलने वाली ए.सी. मशीन बनानी पड़ेगी और ऑक्सीजन भी दुकानों से खरीदना पड़ेगा।

भारत सरकार ने इससे निकलने के लिए कई उपाय प्रचार में लाए हैं। हमारे ही देश के दक्षिणी भागों में कुछ ऐसे आविष्कार हुए हैं जिससे वातावरण में काफी बदलाव आने लगा है, जैसे कि पॉलीथिन को गला कर सड़कें बनाई जा रही हैं जो कि कम हानिकारक हैं और प्लास्टिक का सदुपयोग भी हो रहा है और ऐसे पदार्थों से खाने की प्लेट बनाई जा रही है जिसमें आप खाने को रखकर खाने के बाद उस प्लेट और चम्मच को भी खा सकते हैं। इससे कूड़ा भी कम होता है। इसी तरह और भी ढेर सारे आविष्कार किए गए हैं जिससे धरती के लिए कुछ अच्छा हुआ है और भारत को देखते हुए कई और देश भी जागरूक हुए हैं और अपना योगदान दे रहे हैं।

इन सब प्रक्रिया में सबसे ज्यादा सराहनीय हैं हमारे देश के प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और पर्यावरण मंत्री जिन्होंने इन आविष्कारों को बढ़ावा दिया है जिसके लिए मैं उन्हें शत शत नमन करती हूँ।





श्री शशांक त्रिवेदी

लेखाकार

दुनिया में कई चीजें ऐसी हैं जो हमें विश्वास और अविश्वास के मुहाने पर ले जाकर खड़ा करती हैं। कई ऐसी चीजें हैं जो लोगों को बहुत ज्यादा आकर्षित करती हैं और उन पर लगातार शोध चलते रहते हैं। बचपन से ही विज्ञान में रुचि रही और शिक्षा भी विज्ञान वर्ग से ही हुई तो दुनिया में हो रहे तमाम वैज्ञानिक घटनाक्रम पर थोड़ी बहुत नज़र बनी रहती है।

मुझे 'टाइम-ट्रैवेल' विषय हमेशा आकर्षित करता है। जो लोग विज्ञान वर्ग से हैं अथवा जागरूक हैं वे 'टाइम-ट्रैवेल' से भली भाँति परिचित ही होंगे।

टाइम-ट्रैवेल अर्थात् समय यात्रा। किसी विशेष तरीके का उपयोग करके भूतकाल अथवा भविष्यकाल में चले जाना ही समय यात्रा है।

क्या वाकई ! समय यात्रा सम्भव है?

आज से 500 साल पहले अगर कोई यह कह देता कि मानव दूसरे ग्रहों पर जा सकेगा या फिर हजारों किलोमीटर की दूरी से बात कर सकेगा तो लोग उसे निश्चित ही बेवकूफ घोषित कर देते। जैसे गैलिलियो ने कुछ सदी पहले ये कहने की हिमाकत की कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है और इससे रोमन कैथोलिक चर्च के विश्वास को धक्का लगा। ये वह समय था जब यूरोप में चर्च का आधिपत्य था। राजा चर्च की मर्जी के विरुद्ध आचरण नहीं कर सकता था। गैलिलियो की किताब को प्रतिबंधित कर दिया गया और उन्हें जीवन भर के लिए जेल में डाल दिया गया जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। हालाँकि बाद में जब यूरोप में पुनर्जागरण हुआ और दुनिया में वैज्ञानिकता बढ़ी तब लोगों को गैलिलियो की बात समझ आई।

दुनिया में कई सारी घटनाएँ ऐसी हुईं जिनसे लोग समय यात्रा को गंभीरता से लेने पर बाध्य हुए। बात है सन 1935 की जब ब्रिटिश रॉयल फोर्स के विंग कमांडर सर विक्टर गोडार्ड छुटियाँ मनाने अपने विमान से स्कॉटलैंड से ऑकलैंड जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने नीचे देखा तो ड्रेन एयरफील्ड हवाईपट्टी थी जिसका निर्माण प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान हुआ था और अब उसका इस्तेमाल बंद कर दिया गया था।



जिससे उसकी हालत बहुत खराब हो चुकी थी। हवाईपट्टी के आसपास घास उगी हुई थी और जानवर चर रहे थे। कुछ हफ्तों के बाद जब वे छुट्टी मनाकर वापस आ रहे थे तो उनका विमान एक तूफान में फंस गया। जब तक वे विमान पर दुबारा नियंत्रण कर पाते कि आसमान साफ हो गया। नीचे देखने पर वे फिर उसी हवाई पट्टी के ऊपर थे जहाँ से पहले गुज़रे थे लेकिन अब वहाँ के मंजरनामे बदल चुके थे। हवाईपट्टी के आसपास 2, 3 पीले रंग के विमान खड़े थे और नीली वर्दी में खड़े कुछ अधिकारी बात रहे थे। सर विक्टर गोडार्ड ने संदेहास्पद स्थिति जानकर विमान को वहाँ लैंड नहीं किया और वापस आकर लोगों को ये बात बताई लेकिन किसी को विश्वास नहीं हुआ। कुछ वर्षों बाद ब्रिटिश रॉयल फोर्स के विमानों का रंग पीला और अधिकारियों की ड्रेस नीली कर दी गई साथ ही ड्रेन एयरफील्ड का उपयोग दुबारा शुरू कर दिया गया। विक्टर गोडार्ड ने अपनी पुस्तक में ऐसी कई अजीब घटनाओं का वर्णन किया है।

ये समय यात्रा का एक नमूना हो सकता है या फिर कोई इसे पूर्वाभास भी कह सकता है।

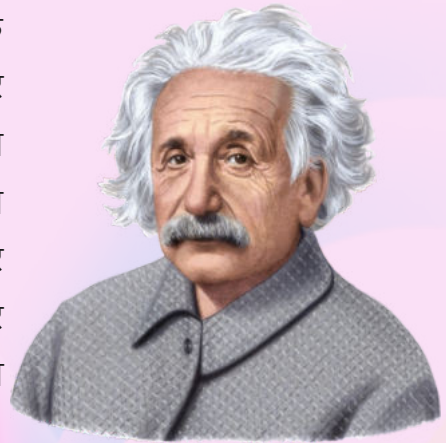
इसी प्रसंग में एक और घटना का जिक्र आता है। एक बार जर्मन पत्रकार जे. बर्नाड ह्यूटन एक स्टोरी को कवर करने हैम्बर्ग शहर में शिपयार्ड पर गए। कार्यक्रम खत्म होने के बाद वे वापिस लौटने वाले थे कि उन्होंने बम बरसाते हुए विमान देखे जो पूरे हैम्बर्ग शहर को तबाह कर रहे थे। उनके कैमरामैन ने जैसे तैसे कुछ फोटोग्राफ खींचे और जान बचाकर भाग आए। किसी अन्य अख़बार ने जब इस ख़बर को प्रकाशित नहीं किया तो उन्हें हैरत हुई। तपतीश करने पर पता चला कि ऐसी कोई भी घटना उस दिन नहीं हुई। अपने मालिक के पास जाकर पूरी बात बताई तो उसे विश्वास नहीं हुआ। सबूत के तौर पर उन तस्वीरों को दिखाया तो उनमें कुछ भी नहीं था। उनके मालिक ने उन्हें शराब पीकर काम पर जाने के कारण काम से निकाल दिया। कुछ समय बाद वे लंदन चले गए। 1943 में एक अख़बार की ख़बर पढ़कर वे चकित रह गए कि ब्रिटिश रॉयल आर्मी ने बमबारी करके हैम्बर्ग शहर को तबाह कर दिया है और उन्होंने अख़बार में छपी तस्वीरों को पहचान लिया। ये वही हैम्बर्ग शहर था और तस्वीरें हू-ब-हू वैसी ही थीं जैसी उन्होंने 11 वर्ष पहले देखी थी।

हालाँकि ये ऐसी घटनाएँ हैं जिनमे किसी ने प्रामाणिक समय यात्रा नहीं की लेकिन किसी न किसी तरीके से उन्हें भविष्य में होने वाले घटनाक्रम का आभास पहले ही हो गया। कालांतर में अल्बर्ट





आइन्सटीन ने विज्ञान की सबसे बड़ी खोज ($E=mc^2$) की जिसके आधार पर अन्य वैज्ञानिकों ने भी समय यात्रा की परिकल्पना की और अपने सिद्धांत दिए। कुछ वर्ष पूर्व दिवंगत हुए वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग के अनुसार अगर कोई व्यक्ति प्रकाश की चाल से चलने वाली रेलगाड़ी पर बैठकर पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाए तो उस पर समय का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ेगा और वह भविष्य का अनुभव कर सकेगा। यह वाकई रोमांचक बात थी लेकिन व्यवहारिक रूप में ऐसा संभव हो पाना असंभव था।



शुरू में लोगों का ये मानना था कि ब्रह्मांड में समय की चाल हर जगह समान है। जब से खगोलशास्त्र में वैज्ञानिकों ने प्रगति की और अन्य ग्रहों पर उपग्रह भेजने शुरू किये तब ये भ्रांति दूर हुई और पता चला कि समय हर ग्रह के लिये अलग रफ़्तार से चलता है। हर ग्रह पर गुरुत्वाकर्षण का मान अलग अलग है इसलिए हमारा वजन भी हर ग्रह पर अलग होगा।

हमारे पुराणों में भी काल की गति का जिक्र आया है जिससे हम ये जान सकते हैं कि हमारे पूर्वजों का विज्ञान कितना उन्नत और विकसित था।

देवासुर संग्राम के दौरान इक्ष्वाकु वंश के राजा मुचकुंद देवताओं की सहायता करने स्वर्ग में गए। करीब 1 वर्ष के युद्ध के बाद जब देवताओं की विजय हुई और उन्होंने इंद्र से घर वापिस जाने की आज्ञा माँगी। तब इंद्र ने उन्हें बताया कि इस 1 वर्ष में पृथ्वी पर कई युग बीत चुके हैं क्योंकि स्वर्ग पर काल की गति पृथ्वी की अपेक्षा बहुत धीमी है।

इसी क्रम में एक अन्य पौराणिक कथा का उल्लेख मिलता है। सतयुग में एक राजा हुए जिनका नाम रैवतक था। उसकी पुत्री का नाम रेवती था। राजा अपनी पुत्री के लिए योग्य वर खोज रहे थे लेकिन बहुत खोजबीन करने पर भी उन्हें कोई सुयोग्य वर नहीं मिला। थक हारकर राजा अपनी पुत्री को लेकर ब्रह्मा जी के पास सहायता माँगने ब्रह्मलोक गए। राजा जब वहाँ पहुँचे तो गंधर्वों का गायन समारोह चल रहा था। राजा गायन समारोह खत्म होने की प्रतीक्षा करने लगे। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद ब्रह्मा जी ने राजा को देखा और उनसे आने का कारण पूछा। राजा ने उनसे पूछा कि भगवन ! मेरी पुत्री के लिए आपने कोई वर बनाया है अथवा नहीं। ब्रह्मा जी राजा की बात सुनकर हँस पड़े और बोले जितनी देर तक तुमने गंधर्वों का गान सुना उतनी देर में पृथ्वी पर कई युग बीत चुके हैं और द्वापर युग चल रहा है। अब वहाँ जाओ और मथुरा में बलराम जी (भगवान श्री कृष्ण के अग्रज) से इनका विवाह कर दो। अच्छा हुआ



कि तुम रेवती को अपने साथ लेकर आए जिससे इनकी आयु नहीं बढ़ी अन्यथा पृथ्वी पर यह प्रतीक्षा में ही रह जाती।

इस विषय जितना लिखा जाए और पढ़ा जाए, अत्यंत रोमांचकारी होता है। देश दुनिया में ऐसी बहुत घटनाएँ सुनने को मिलती हैं कि कोई व्यक्ति मृत्यु के कुछ घंटे बाद जीवित हो गया। वो मौत के बाद के अपने अनुभव भी साझा करता है तो हमें रोमांच होता है। पता नहीं ब्रह्माण्ड में कितने आयाम हैं और कितनी दुनियाएँ हैं! क्या कहीं समय यात्रा संभव है? अगर संभव होती तो हम सबके पास यकीनन कुछ न कुछ ऐसा है जिसे हम समय में पीछे जाकर बदल पाते ! भविष्य में जाकर कितने ही संकट टाल देते ! आपको क्या लगता है, क्या 'टाइम-ट्रैवेल' अर्थात समय-यात्रा सम्भव है अथवा कोरी कल्पना है ?





श्री अमीन अली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बात उन दिनों की है जब मैं नागालैंड की राजधानी कोहिमा में कार्यरत था। नागालैंड जिसे पूरब का स्विट्जरलैंड एवं त्यौहारों का प्रदेश भी कहा जाता है। कोहिमा में रहते हुए मुझे लगभग एक वर्ष हो चुका था। अब मैं इस शहर से भलीभाँति परिचित हो चुका था। यहाँ के खूबसूरत मौसम का अभ्यस्त हो गया था। यहाँ की स्थानीय भाषा 'नागामिज' को थोड़ा बहुत समझने लगा था। नागामिज नागालैंड की आम बोलचाल की भाषा है, जिसकी कोई लिपि नहीं है। आप नागामिज भाषा को पँचमेल खिचड़ी भी कह सकते हैं क्योंकि यह पाँच भाषाओं हिन्दी, अँग्रेजी, आसामी, बांग्ला एवं नेपाली का मिश्रण है। नागामिज के अतिरिक्त यहाँ के सभी जनजातियों की अपनी-अपनी भाषा भी है जिसका प्रयोग वे अपनी जनजाति के लोगों के साथ बातचीत के लिए करते हैं। इस एक वर्ष के दौरान मैं कोहिमा के अधिकतर पर्यटक स्थलों को देख चुका था, अब नॉर्थ ईस्ट के किसी नए प्रदेश को देखने की इच्छा तीव्र हो रही थी।

मेघालय की राजधानी शिलांग, जिसे पूर्व का स्कॉटलैंड भी कहते हैं, की सुंदरता के बारे में अकसर अपने सहकर्मियों से सुनता रहता था। शिलांग में नॉर्थ ईस्ट के सभी भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्मिकों हेतु क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान स्थित है। वहाँ पर प्रायः कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी प्रशिक्षण हेतु जाते रहते थे। सहकर्मियों के वर्णन एवं इंटरनेट पर शिलांग के बारे में पढ़कर मेरा मन भी शिलांग जाने को उत्सुक था। संयोगवश वहाँ जाने का प्रबंध भी हो गया। कार्यालय के एक कर्मचारी को कंप्यूटर प्रशिक्षण हेतु क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, शिलांग में नामित किया गया था किन्तु अपरिहार्य कारणों से वह जाने में असमर्थ थे। उन्होंने अपने स्थान पर किसी अन्य कार्मिक को नामित करने हेतु प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। वहाँ पर प्रशिक्षण संबंधी कार्य भी मेरे द्वारा संपादित किया जा रहा था। उनके प्रार्थना पत्र को देखकर मैं प्रसन्न हो गया। मैंने अपने अनुभाग अधिकारी से उक्त प्रशिक्षण में जाने का प्रस्ताव रखा जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। शीघ्र ही प्रशिक्षण में भाग लेने हेतु आदेश मिल गया। इस प्रशिक्षण हेतु कार्यालय के मेरे एक अन्य साथी पहले से ही नामित थे। वे भी शिलांग पहली बार जा रहे थे। प्रशिक्षण 6 जुलाई से 16 जुलाई 2015 तक था जिसमें रविवार की छुट्टी भी पड़ रही



थी। हमने प्रशिक्षण के साथ-साथ शिलांग घूमने का पूरा प्लान तैयार कर लिया।

हम लोग 4 जुलाई की दोपहर कोहिमा से दिमापुर के लिए टैक्सी से निकल गए। दिमापुर नागालैंड का एकमात्र रेलवे स्टेशन एवं एयरपोर्ट है। दिमापुर को नागालैंड की आर्थिक राजधानी भी कहा जाता है। कोहिमा से दिमापुर की दूरी लगभग 80 किलोमीटर है। शाम तक हमलोग दिमापुर पहुँच गए। वहाँ से गुवाहाटी के लिए हमारी ट्रेन रात 9 बजे थी। हमने रात का खाना खाया और ट्रेन में बैठ गए। सुबह करीब 4 बजे हम लोग गुवाहाटी में थे। गुवाहाटी स्टेशन के बाहर पलटन बाजार से शिलांग के लिए टैक्सी पर बैठ गए। गुवाहाटी से बाहर निकलते ही प्रकृति की खूबसूरती के अद्भुत दर्शन हुए। यहाँ प्रकृति की खूबसूरती हर कदम पर बिखरी पड़ी थी। बारिश के मौसम में सड़क के किनारे की पहाड़ियों पर उठती धुन्ध, बारिश से भीगी हुई चमचमाती सड़क और हर तरफ फैली हरियाली देखकर मन प्रसन्न हो रहा था। लगभग 4 घंटे की यात्रा के बाद हम लोग क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, शिलांग पहुँच गए। वहाँ फ्रेश होकर नाश्ता किया और टैक्सी बुक करके निकल गए शिलांग की हसीन वादियों में। हमने सबसे पहले शिलांग पीक देखने का प्लान बनाया क्योंकि ये शाम को पाँच बजे बंद हो जाता है और प्रशिक्षण के दौरान वहाँ जाने जाना संभव नहीं होगा। शिलांग पीक मेघालय की सबसे ऊँची चोटी है, जिस पर पर्यटकों के लिए व्यू पॉइंट बना हुआ है। शिलांग पीक से पूरे शिलांग का विहंगम नजारा दिखता है। यहाँ पहुँचने के लिए वायुसेना के रिहायशी क्षेत्र से गुजरना पड़ता है इसलिए यहाँ बिना अनुमति प्रवेश वर्जित है। शिलांग पीक पर भारतीय वायुसेना के उच्च कोटि के राडार लगे हुए हैं जो इस तरफ से आसमान में घुसने वाले घुसपैटिए पर नजर रखते हैं। इसके अलावा पहाड़ी के नीचे एक विस्तृत क्षेत्र में भारतीय वायु सेना की पूर्वी एयर कमांड का मुख्यालय है, इसलिए यह सुरक्षा की दृष्टि से बेहद संवेदनशील क्षेत्र है।

दूसरे दिन से प्रशिक्षण शुरू हो गया। शाम तक हमने प्रशिक्षण प्राप्त किया और उसके बाद पुलिस बाजार देखने निकल गए। पुलिस बाजार को शिलांग का केंद्र बिन्दु कहा जाता है। यहाँ खाने-पीने के लिए अच्छे रेटोरेंट के साथ साथ स्ट्रीट फूड भी आसानी से मिल जाता है। चाइनीज डिशेज यहाँ की स्पेशलिटी है। आप यहाँ से कपड़े एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुएँ खरीद सकते हैं। अगले दिन फिर शाम को प्रशिक्षण के उपरांत हम लोग वार्ड्स लेक देखने के लिए निकल गए। यह खूबसूरत झील पुलिस बाजार से मात्र एक किलोमीटर दूरी पर स्थित है। नौकायन का लुत्फ उठाने के लिए यह एक बहुत ही अच्छी जगह है। झील पर बने लकड़ी के पुल से आसपास का बड़ा सुंदर नजारा दिखता है। झील के किनारे-किनारे चहलकदमी करने में भी बड़ा मजा आता है। यहाँ प्रवेश के लिए प्रवेश शुल्क भी लगता है जो बहुत ही कम है। इसके अतिरिक्त हम लोगों ने डॉन बॉस्को म्यूजियम, लेडी ह्याट्री पार्क

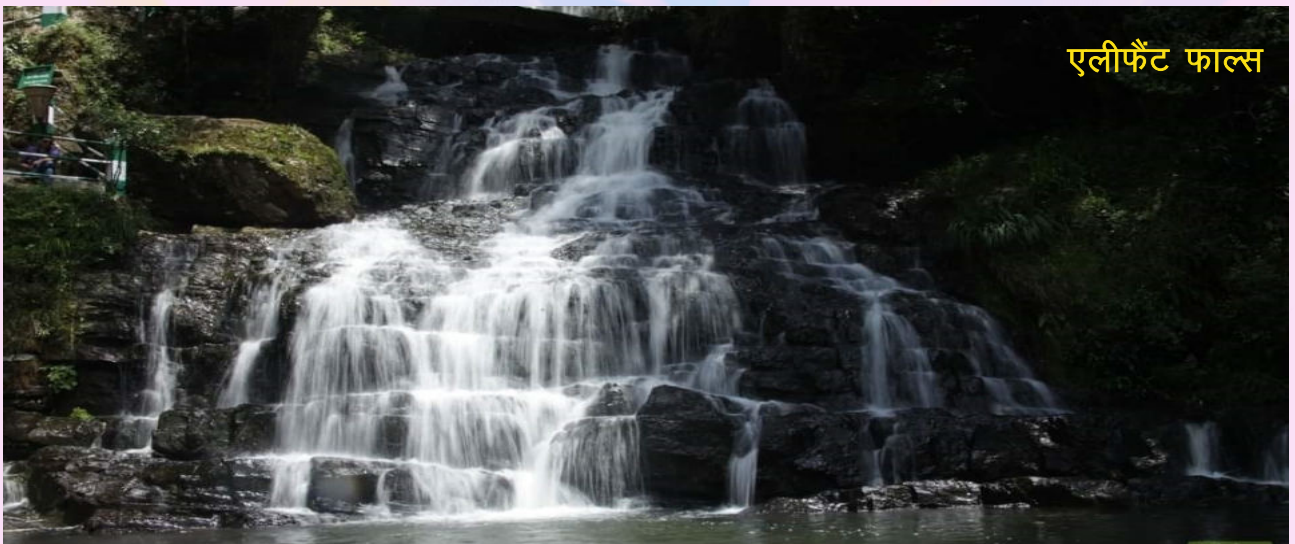


ऊमीयम लेक इत्यादि देखा।



वार्ड्स लेक

हम लोगों ने रविवार को चेरापूंजी देखने का कार्यक्रम पहले ही तय कर लिया। वहाँ जाने के लिए टैक्सी बुक हो गई। सुबह 8 बजे हम लोग चेरापूंजी के लिए निकल गए। हमारा पहला पड़ाव था शिलांग का प्रसिद्ध आकर्षण एलीफैंट फॉल्स। एलीफैंट फॉल्स तीन स्तरों पर गिरते पानी का झरना है। पहला स्तर तो पार्किंग क्षेत्र से कुछ सीढ़ियाँ उतरने के बाद ही दिख जाता है। थोड़ी सी सीढ़ियाँ उतरने के बाद झरने का दूसरा स्तर दिखता है। सीढ़ियों वाले रास्ते से थोड़ा और नीचे जाने पर हम झरने के सबसे निचले स्तर पर पहुँच जाते हैं, जहाँ झरने के सामने बने पानी के पूल में जा सकते हैं। कहा जाता है कि निचले हिस्से में ही एक एलीफैंट जैसी दिखने वाली बड़ी सी चट्टान के नाम पर अंग्रेजों ने इस झरने का नाम एलीफैंट फॉल्स रखा था। लेकिन वर्ष 1897 में आए भूकम्प से यह चट्टान बिखरकर बह गई।



एलीफैंट फॉल्स



वहाँ से हम थोड़ा आगे बढ़े तभी बारिश शुरू हो गई। हमारा अगला पड़ाव मावस्माई गुफा थी। यह मेघालय की सबसे प्रसिद्ध, सबसे ज्यादा सुविधाओं से युक्त और सबसे ज्यादा लोगों द्वारा घूमी जाने वाली गुफा है। मेघालय की कुछ ही गुफाओं के अंदर प्रकाश की व्यवस्था है, जिसमें से एक मावस्माई गुफा है। दूसरी गुफाओं की तुलना में यह गुफा ज्यादा संकरी है, इसलिए कुछ हिस्सों में रेंगकर चलना पड़ता है। गुफा में कई जगह पानी भी भरा रहता है, जिससे जूते गीले हो सकते हैं। वहाँ से फिर हम लोग सेवेन सिस्टर फॉल्स देखने के लिए रुके। लाइमस्टोन के चौड़े पठार से एक के बाद एक सात धाराओं के साथ गिरने के कारण इसे सेवेन सिस्टर फॉल्स कहा जाता है। सात धाराओं के गिरने का दृश्य एक जादुई अनुभव सा लगता है। बारिश के मौसम में तो सात के बजाय 10-12 धाराएँ नजर आने लगती हैं। इस झरने को देखने का असली मजा बारिश के मौसम में ही है, बशर्ते कि मौसम साफ रहे। इसके साथ साथ हम लोग नोहकालिकाई झरना, ईको पार्क, डैन्थलेन झरना, माकदोक दिम्पेप वैली इत्यादि देखा और शाम को लगभग 6 बजे तक हॉस्टल वापस आ गए।

अंततः शिलांग घूमने का सपना पूरा हो गया। शिलांग में घूमना मतलब हर कदम पर प्रकृति की जादुई दुनिया से सम्मोहित होने जैसा है। गारो, खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों के बीच फैली इस धरती में जिधर नजर घुमा लो उधर ही प्राकृतिक सुंदरता बिखरी पड़ी है। इतने कम क्षेत्र में प्रकृति की ऐसी अद्भुत चित्रकारी कम ही देखने को मिलती है। यहाँ पहुँचकर ऐसा लगता है जैसे ईश्वर ने एक बड़े कैनवास में चुन चुनकर रंग भर दिये हों, कहीं बादल के रूप में, कहीं झरनों के रूप में, कहीं नदियों के रूप में.. झीलें, पहाड़ियाँ, जंगल, गुफाएँ, पेड़ की जड़ों से बने अद्भुत पुल, क्या नहीं है प्रकृति के इस कैनवास में।



लेखा संगम

पद्य संगम

नारी नहीं अबला या बेचारी



श्री चंचल कुमार तिवारी
सहायक लेखाधिकारी

अब न कोई कहे नारी को अबला या बेचारी,
हर रूप, हर युग में उसको नर से बेहतर देखा है।

माता की गर्भ में पलते,
शक्तिहीन इस नर को भी देखा है,
इस धरा पर आने से पहले,
मैंने स्वयं अनंत ब्रह्माण्ड एवं आदिशक्ति को देखा है।

नर के कोमल शरीर को मां के अमृत दूध से,
इस नर का बलिष्ठ तन बनते देखा है,
आज के स्वावलंबी नर को,
मां की अंगुली भी पकड़कर चलते देखा है,
हर रूप, हर समय उसे नर से बेहतर हमने देखा है।

कभी माता, कभी बहन तो कई रूपों में,
नर को नारी पर आश्रित होते देखा है,
हर रूप हर समय उसे नर से बेहतर हमने देखा है।

साहस के पर्याय नर को,
बचपन में मां के आंचल में छिपकर रोते देखा है,



नारी शक्ति के समक्ष,
स्वयं विधाता को भी झुकते देखा है।

हर काल में, हर रूप में,
करुणा, त्याग एवं वीरता आदि गुणों में,
नारी को नर से आगे देखा है,
हर रूप, हर समय उसे नर से बेहतर हमने देखा है।

बिन नारी के नर को अधूरा देखा है,
हर सामर्थ्य में नारी को नर से बेहतर देखा है,
हर रूप, हर समय उसे नर से बेहतर हमने देखा है।





श्री राजीव सिंह 'राही'
सहायक पर्यवेक्षक

ये ज़ख़्म उनसे मिला है तो कोई बात नहीं ।
यही उल्फ़त का सिला है तो कोई बात नहीं ॥

यही बहुत है कि वो कारवाँ के साथ चले ।
कारवाँ लूट लिया है तो कोई बात नहीं ॥

उम्र भर जिसको पलकों पे बिठाए रखा ।
आज वो छोड़ गया है तो कोई बात नहीं ॥

एक मुद्दत से मैं उसकी जरूरत बना रहा ।
अब जरूरत बदल गई है तो कोई बात नहीं ॥

वो बिजलियाँ भी गिराता तो कोई गम न था ।
नज़र से उसने गिराया है तो कोई बात नहीं ॥

तिश्नगी जब न बुझी पैमानों से तो तौबा कर ली ।
उसने आँखों से पिला दी है तो कोई बात नहीं ॥

नफरतों की आंधियों ने बर्बाद कर दिया 'राही' ।
ऐ मोहब्बत तेरे रहते उजड़ गया हूँ तो कोई बात नहीं ॥

राम वन गए तो बन गए



श्री शिवम कुमार
लेखाकार

राम वन गए तो बन गए,
भरत भी कुछ कम नहीं रहे ।

राम राज्य छोड़कर वन गए,
भरत भाई आज्ञा में बंध गए

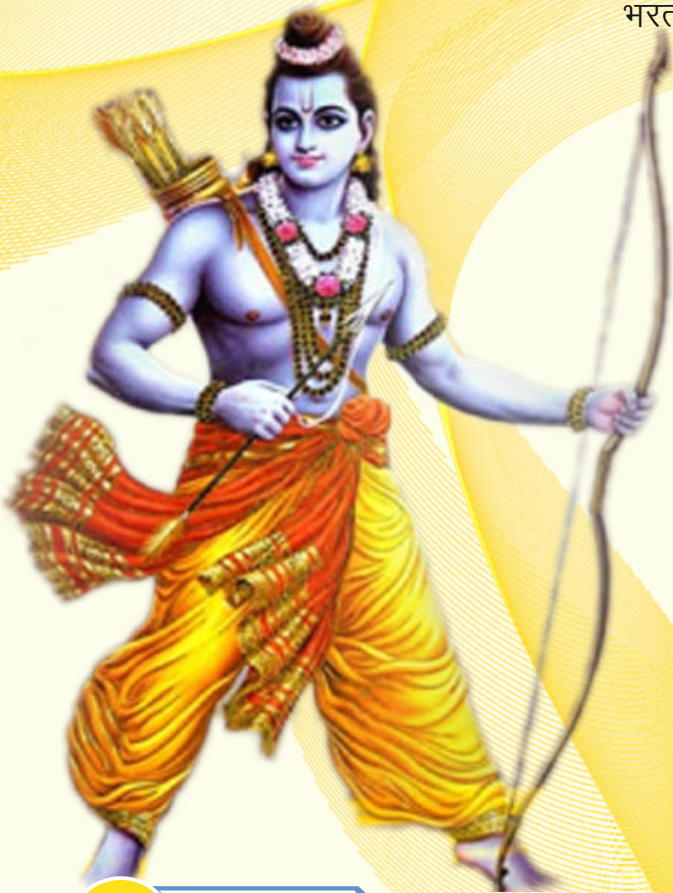
राम कानन राजू संभालते रहे,
भरत चौदह वर्ष खड़ाऊ में राज देखते रहे ।

राम वन गए तो बन गए,
भरत भी कुछ कम नहीं रहे ।

राम मातु आज्ञा में वन को गए,
भरत मन से मातु को ही त्याग गए ।

राम भगवान बन के आ गए,
भरत दास बन के भा गए ।

राम राम ही रहे,
भरत भाई का उदाहरण बन गए ।





राम शबरी को तारते रहे,
भरत 14 वर्ष राम राह को निहारते रहे ।

राम जंगल जंगल जानकी को खोजते रहे,
तो भरत 14 वर्ष मांडवी से दूर ही रहे ।

राम विटप में भटकते रहे,
मेरे भरत राजपाट से विमुख ही रहे ।

राम कर्तव्य पथ पे गए ।
भरत स्वथा कर्तव्यपथ में बंध गए ।

राम राम ही रहे,
भरत भक्त भाव से त्याग की मूर्ति बन गए ।

दुनिया देती है राम का उदाहरण,
राम भरत का ही उदाहरण दे गए ।

राम—राम ही रहे लेकिन भरत भी कुछ कम नहीं रहे ।



प्रकृति का अद्भुत सौन्दर्य



श्री अनुराग निषाद
पुत्र - श्री अनिल कुमार
लेखाकार

प्रकृति का सौन्दर्य कितना अनुपम,
धरती का सौन्दर्य हो रहा कम ।
धरती को बचाने में नहीं होंगे पीछे हम,
इसकी सुरक्षा, सेवा का संकल्प लेंगे हम ॥

चारों तरफ है कितनी हरियाली,
प्रकृति की सुन्दरता भरपूर निराली ।
धरती पर ही करते वास,
उसका उपहार हमारे पास ॥

तरु बिन न ले सकते श्वास,
वसुधा बिन न कर सकते वास ।
है पहाड़, पठार और वन,
इसकी सुन्दरता कितनी पावन ॥

करता है मानव जल दूषित,
होता है वातावरण प्रदूषित ।
उसकी मृदा हमारी शान,
उसका वारि अमृत समान ॥

बिना देर किए हुए,
होना है हमें जागरूक ।





हर व्यक्ति वृक्ष लगाए,
प्रकृति का सौन्दर्य बढ़ाए ॥

प्रकृति के चारों ओर,
हरा-भरा हो भू- भाग ।
पर्यावरण के प्रति हमें,
बढ़ाना होगा अनुराग ॥

इसकी सुन्दरता बढ़ाने का,
करेंगे हम भरपूर प्रयास ।
हरी - भरी धरती पर ही,
सब कर सकते निवास ॥

प्रकृति के बिना इस जग का,
नहीं है कोई आधार ।
इसके बिना जीवन की,
कल्पना करना भी है निराधार ॥

प्रदूषण की समस्या भी,
पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई है ।
स्वयं मानव ने अपने लिए,
यह समस्या बनाई है ॥

स्वच्छ वातावरण में ही हम,
ले सकते हैं खुल के साँस ।
स्वच्छ परिवेश में ही,
हम सब कर सकते हैं वास ॥



राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत उल्लिखित दस्तावेजों की सूची
LIST OF DOCUMENTS UNDER SECTION 3 (3) OF OFFICIAL LANGUAGE ACT, 1963

क्र. सं. Sl. No.	दस्तावेज का नाम Name of the Document
01	संकल्प / Resolutions
02	साधारण आदेश / General Orders
03	नियम / Rules
04	अधिसूचनाएँ / Notifications
05	प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट / Administrative & Other Reports
06	प्रेस विज्ञप्तियों / Press Communiques
07	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट / Administrative and Other Reports to be laid before a House or the Houses of Parliament
08	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागजपत्र / Official papers to be laid before a House or the Houses of Parliament
09	संविदाएँ / Contracts
10	करार / Agreements
11	अनुज्ञप्तियाँ / Licenses
12	अनुज्ञापत्र / Permits
13	निविदा सूचनाएँ / Tender Notices
14	निविदा प्रारूप / Tender Forms

राजभाषा अधिनियम, १९६३ की धारा ३(३) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है –

As per Section 3 (3) of the Official Languages Act, 1963 the following are covered in General Orders:

- (१) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हो और जो स्थायी प्रकार के हो।
 (२) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हो या उनके लिए हो;
 (३) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हो या सरकारी कर्मचारियों के लिए हो।
 (1) All Orders, Decisions or Instructions intended for departmental use and which are of standing nature;
 (2) All such Orders, Instructions, Letters, Memoranda, Notices, etc. related to or intended for group or groups of Government employees;
 (3) All Circulars whether intended for departmental use or for Government employees.

नोट : अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों में ही तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।



हिंदी संगोष्ठी एवं कवि सम्मेलन का आयोजन



हिंदी कार्यशाला का आयोजन



हिंदी कार्यशाला का आयोजन

लेखा संगम

